शूटआउट:

बलमा का बाग़ी (उपन्यास)

-आर. पटेल

कापीराइट © 2023 आर. पटेल

यह उपन्यास पूर्णतः काल्पनिक है। इसका किसी व्यक्ति या घटना से कोई संबंध नहीं है। इस कहानी का उद्देश्य किसी धर्म या संप्रदाय की भावनाओं को आहत करना भी नहीं है। यदि कोई समानता पाई जाती है तो यह महज़ संयोग होगा।

मेरे माता-पिता को समर्पित

प्रिय मित्रों,

मेरा नाम 'राम पटेल' है। दोस्त मुझे 'आर. पटेल' कहते है। यह मेरा पहला उपन्यास है। आशा करता हूं, आपको उपन्यास पसंद आयेगा। भूलवश मुझसे कोई त्रुटी हो गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

1

घड़ी का कांटा ग्यारह बजा रहा था। रात गहराने लगी थी और रिमझिम बारिश हो रही थी। अवंतिका शहर का यह आखरी छोर था। इस इलाके में शहर की पुरानी बसावट थी। इस क्षेत्र में पेड़-पौधों की संघनता अधिक और इमारतों की संख्या कम थी। सड़क के बीचों-बीच लगी लाईटों से चकाचौंध थी। सड़कों पर गाड़ीयों की आवाजाही कम हो रही थी।

सुनसान माहोल में सड़क के किनारे एक गाड़ी आकर रुकी, जिसमें चार व्यक्ति सवार थे। उन्होंने गाड़ी को एक खंडहर में में पार्क किया। चारों गाड़ी से उतरे, उनकी कद-काठी ऊंची और मजबूत दिखाईं दे रही थी। उन्होंने ऊपर से नीचे तक काले रैनकोट पहन रखे थे। चारों सामने वाली एक संकरी सड़क की ओर बढ़ गए। सड़क पर लगी लाईटों से बचते हुए, वे अंधेरे में चल रहे थे।

चौड़ी-संकरी गलीयो से होते हुए वे एक पुरानी इमारत के कुछ दूर एक ऊंचे रेडियो टावर के पास आकर रुके।

इमारत के आसपास पांच सौ फुट के दायरे में कोई ओर इमारत नहीं थी। इमारत के दांई ओर पत्थरों और लकड़ियों के ढेर पड़े थे और बाईं ओर खाली जगह थी, जहां मखमली घास ने अपना गैरकानूनी कब्जा जमा रखा था। वह इमारत एक दस मंजिला इमारत थी और बहुत आलीशान भी। इमारत बहुत पुरानी थी, वह कभी एक नामी होटल हुआ करती थी, मगर कुछ अरसे पहले यहां एक आतंकी हमला हुआ और उस हमले ने इस इमारत की तस्वीर बदल दी। हमले ने हिस्सों को तबाह कर दिया, तब से यह

इमारत विरान पड़ी हुई थी। इमारत काफी जर्जर अवस्था में थी, उसकी दीवारें उबड़-खाबड़ हो चुकी थी और चीख-चीख कर कह रही थी कि कोई आएं और उसकी मरम्मत करवाए ताकि वह फिर से बोल उठें।

वह चारों रेडियो टावर के पास कुछ अंधेरे में खड़े थे।

"क्या यह वही इमारत है?" नामधारी ने अपनी पिस्तोल निकालते हुए पूछा।

"यस सर, उस जवान औरत ने इसी इमारत में उन पांच आतंकियों को देखा था।" उसके साथी न्यूटन1 ने जवाब दिया।

"जवान शब्द पर कुछ ज्यादा ही जोर दे रहा है।" नामधारी ने मजाकिया अंदाज में कहा।

"यस सर!, वह कुछ ज्यादा ही तंदुरुस्त नजर आ रही थी।" न्यूटन1 ने अपने आठ दांत दिखाते हुए कहा। चारों के होंठों पर दबी मुस्कान तैर गई।

नामधारी ने इमारत पर अपनी नजरें घुमाई। इमारत की लाईटें बंद थी, मगर आसपास के दुसरे मकानों और टावर की लाईटों ने इमारत को रौशन कर रखा था। ऊपर से नीचे तक देखने पर पता चला कि उसके पूराने हो चुके दरवाजे दीमक चाट चुकी थी। आधे दरवाज़े हमले की मार से टूट चुके थे, लेकिन नीचे ग्राउण्ड फ्लोर पर लगा दरवाजा ही अब तक सुरक्षित बचा हुआ था, क्योंकि वह लोहे का बना हुआ था।

इमारत में कोई हलचल नहीं होने पर नामधारी ने अपनी पिस्तोल और टोर्च निकाल कर, टीम को पीछे आने का इशारा किया और इमारत की ओर बढ़ गया ।

इमारत के नजदीक पहुंच कर उन्होंने दरवाजे को अंदर से बंद पाया और दरवाजे के पास लगीं खिड़की को हल्का धक्का देने पर खुल गई। सभी सावधानी से खिड़की के रास्ते अंदर दाखिल हुए। सामने सीढ़ीयां बनी हुई थी जो जगह-जगह से टूंटी हुई थी। चारों सीढीयौं से ऊपर चढ़ने लगे। वह बड़ी ही सावधानी से चल रहें थे।

पहले फ्लोर पर एक बड़ा सा हॉल था, जहां पर पुराना फर्नीचर था जिसे फर्नीचर ना कह कर कबाड़ कहना मुनासिब होगा। चारों ने अपनी आठ आंखें उस हॉल में दौड़ाई लेकिन वहां कबाड़ और हवा के अलावा कुछ नहीं था। चारों सावधानी से सीढ़ियों से होते हुए ऊपर चढ़ने लगे।

जब वे खोजते-खोजते आठवें फ्लोर पर पहुंचे तो वहां अजीब सी जली हुई गंध वहां फैलीं हुई थी, जो किसी की उपस्थिति का आभास दे रही थी। सभी ने अपनी पिस्तोल पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। बिना आहट किए चारों सामने के कमरे से आ रही रोशनी की तरफ बढ़ने लगे। दरवाजे के पास आकर नामधारी ने दरवाजे की दरारों से झांक कर देखा तो कमरे में कोई मौजूद नहीं था। किसी को ना पाकर नामधारी ने उस कमरे के इर्द-गिर्द के कमरों में झांकने पर पाया की वह पूरी तरह खाली थे। तभी ऊपर की छत से किसी के चलने की आहट आई। चारों उन खाली कमरों में जाकर छुप गए।

अब आहट सीढ़ियों से आने लगी, जब वे गलियारे पर पहुंचे तो वहां अंधेरा था। अब वे उस कमरे के करीब से होकर गुजरने वाले थे, जहां नामधारी खिड़की के एक होल से उन्हें देख सकता था। खिड़की के सामने से होकर वे जा रहे थे। तब नामधारी ने देखा कि वे संख्या में पांच व्यक्ति है। सबसे आखरी में चल

रहा व्यक्ति कुछ ठिठका उसे किसी की मोजुदगी का संकेत मिला होगा। वह कुछ पलों के लिए रुका और फिर आगे बढ़ गया। सभी कमरे में दाखिल हुए और दरवाजे को अंदर से बंद करने की आवाज हुईं।

नामधारी ने पांचों टारगेटस को पहचान लिया था। उसे उसके शिकार मिल चुके थे। वह कुछ पल रुका और फिर उस कमरे से सभी बाहर निकल आये। अभी बिना किसी आहट के उस कमरे के पास पहुंचे ही थे कि उस कमरे की लाईटें बंद हो गई।

नामधारी बहुत ही सतर्क था, वह अपनी पिस्तोल पर पकड़ बढ़ा चुका था। उसने न्यूटन2 को कुछ इशारा किया, वह इशारा समझ गया और दुसरे कमरे में चला गया।

कमरे के पास नामधारी और न्युटन1, न्यूटन3 अपनी पोजीशन ले चुके थे। नामधारी ने दरवाजे की तरफ अपने हाथ को घुमाकर न्यूटन1 की ओर इशारा किया।
न्यूटन1 ने कुछ कदम पीछे हट कर एक धावक की मुद्रा बनाई और तेज रफ्तार से भागते हुए दरवाजे पर एक जबरदस्त लात मारी। इस ताबड़तोड़ हमले ने पहले से ही अधमरे दरवाजे के खरपच्चे उड़ा दिए। दरवाजा टुटते ही नामधारी नामक शिकारी फुर्ती से कमरे में दाखिल हुआ। कमरे में अंधेरा था लेकिन उसके सिर पर लगी टार्च ने शिकार को ढूंढ़ निकाला। कमरे में रखे एक लोहे के बक्से के पीछे दो टारगेट बैठे थे। उन्होंने भी पिस्तोल तान रखीं थी। नामधारी बहुत सावधान था। उन्होंने नामधारी पर फायरिंग की लेकिन नामधारी दाईं ओर उछल गया। नामधारी ने उछलते ही अपनी टार्च बंद कर दी। उसकी तेज़ आंखों ने उस कमरें में बहुत कुछ देख लिया था। उसे हो चुका मालूम था कि बक्से पर फायरिंग करने से

कुछ नहीं होना है। उसने देखा कि वहां एक और भी छोटा कमरा है। जहां बाकी के तीन टारगेट मोजूद होंगे।

न्यूटन1और न्यूटन3 भी कमरे में दाखिल हो चुके थे। सभी ने अपनी टार्च को बंद कर लिया। अब कमरें में अंधेरा था और हाथ को हाथ नहीं दिखाई दे रहा था। नामधारी ने न्यूटन1 को कुछ कोड्स में योजना बताई। कुछ पल रुका और नामधारी ने चालाकी दिखाते हुए अपनी टार्च पर लगे हत्थे को दाईं ओर बढ़ाया और टार्च को कुछ पल के लिए टिमटिमाया। उन दोनों टारगेट ने टार्च पर फायरिंग शुरू कर दी लेकिन वे चूक गए । परन्तु वे यहीं गलती कर बैठे। टार्च की कुछ पल की रोशनी में न्यूटन1 ने जो अंधेरे में ही कमरे के उस कोने में खिसक गया था, जहां वे दोनों टारगेट उसके निशाने पर थे। उनके ऊपर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। दोनों वहीं ढेर हो गए। अब कमरें में फिर से सन्नाटा छा गया।

नामधारी ने दुसरे कमरे में टार्च को घुमाया। वहां भी एक बड़ा सा बक्सा रखा हुआ था। उसकी आड़ में टारगेट छिपे होने की प्रबल संभावना थी। बाकी के दो टारगेट दरवाजे के दोनों ओर होंगे। न्यूटन1 और न्यूटन3 भी अपनी पोजीशन ले चुके थे। उन्हें उस बक्से के पीछे छिपे टारगेट को कवर करना था।

नामधारी भागता हुआ दरवाजे के पास से होता हुआ हवा में घूमा और दरवाजे के दोनों ओर खड़े टारगेट पर फायरिंग की। दोनों उस पर फायरिंग करते उससे पहले नामधारी की पिस्तौल से निकलीं गोलीयों ने उनके सीनों को छलनी कर दिया। नामधारी घसीटता हुआ दीवार से जा टकराया। नामधारी ने बहुत फुर्ती से ख़ुद को संभाला।

नामधारी ने उस बड़े से बक्से के पीछे छिपे उस शख्स से कहा-

“काला! मेने सुना है कि आज तुम्हारा बर्थडे है। मैं आज तुम्हारे बर्थडे की मुबारकबाद देने आया हूं।”

“पार्टी तो बनती है बॉस।” न्यूटन1 ने कहा

“सारी नामधारी, मैं केक लाना भुल गया, लेकिन मैं तेरी खोपड़ी में गोली डाल कर अपना बर्थडे मना लूंगा।” काला ने खिसियाते हुए कहा।

“ देखा टीम, बर्थडे इसका और खर्च हम होंगे। मेरे बर्थडे बॉय देख हम तोहफे में तेरी मौत का सामान लाएं हैं।”नामधारी ने मुस्कराते हुए कहा।

काला और नामधारी एक साथ खड़े हुए। दोनों आमने-सामने थे। नामधारी ने ट्रीगर दबाया, लेकिन नामधारी की पिस्तौल की गोलियां खत्म हो चुकी थी। काला ने नामधारी पर गोली चलाई लेकिन नामधारी फुर्ती से एक ओर झुक गया, मगर अब वह उसके निशाने पर था।

“तेरा खेल खत्म नामधारी।” उसने चीखकर कहा।

“काला, खेल तो तेरा खत्म होने वाला है।” नामधारी ने अपने हाथ को घुमाते हुए कहा।

काला कुछ समझ पाता उससे पहले एक साथ दो पिस्तोल चलने की आवाज सुनाई दी।

धांय-धांय....!

काला अपनी पिस्तोल ताने ही झुलता हुआ, जमीन पर गिर पड़ा। उसके सिने और पीठ से खून की धार बह निकली। वह तड़प रहा था।

नामधारी के हाथ में एक छोटी सी पिस्तौल थी और काला के पीछे वाली दीवार पर लगी खिड़की पर न्यूटन2 अपनी पिस्तोल की नली पर फूंक मारता हुआ झांक रहा था।

“तोहफा कुबूल करो।” न्यूटन2 ने उपहास किया।

“ मौत मुबारक हो काला।” नामधारी ने एक और गोली दागते हुए कहा।

काला के चेहरे पर मुर्दानी छा गई। उसकी आंखें फ़ैल चुकी थी।

इमारत में कुछ और भी आतंकी होने की संभावना हो सकती थी, इसलिए नामधारी और उसकी टीम ने इमारत की तलाश शुरू कर दी।

जब तलाशी खत्म हुई तो वहां अब कोई आतंकी नहीं बचा था, केवल वही पांच आतंकी थे जिनकी उन्हें खबर थी। उन्हें कमरें में बारुद, राइफल्स और फिरौती में लिया गया नकदी पैसा भी बरामद हुआ।

तलाशी खत्म होते ही नामधारी ने अपने माइक्रोफोन से हेडक्वार्टर में सुचना दी।

“हेलो! मिशन काला सक्सेसफुल!, ओवर।

“ हम जल्द ही सहयोगी दस्तें को भेज रहे हैं, ओवर।” माइक्रोफोन पर आवाज आई।

“ऑवर एंड ऑउट!” नामधारी ने डीशकनेक्ट करते हुए कहा।

¶¶¶¶

अवंतिका शहर अपने आप में एक अनूठा शहर है। सुबह होते ही घाट के मंदिरों से ढोल, नगाड़ों और संगीत की सुरीली आवाजें अपना अलग ही खुशनूमा माहोल पेश करती है। कबूतरों के झुंड आकाश में तैरते दिखाई देते है। शहर के ब्रीजनुमा जाल आपस में गूंथे हुए है। इस समय बगीचों की सैर करते लोग अपने ही स्वास्थ्य संसार में मसरूफ होते है। ऐसे ही किसी बगीचे के पास बने घर की खिड़की पर बैठी चिड़िया शीशे में अपने प्रतिबिंब को देख उसे चोंच मार रही थी। खिड़की में झांकने पर उसने पाया कि बैड

पर एक युवक सोया हुआ है। उसके चेहरे की सख्त त्वचा और दाढ़ी से उसकी उम्र का पता चल रहा था कि वह अपनी जिंदगी के चालीस साल तय कर चुका है, लेकिन उसका कसरती शरीर और कटावदार बाहु उसकी उम्र को दस साल पीछे ढकेल रहे थे। वह 'एम.के. नामधारी' उर्फ मकर कैलाशनाथ नामधारी था।

नामधारी वैसे तो रीवा शहर से ताल्लुक रखता है, लेकिन उसे पुलिस की नौकरी के चलते अपना परिवार और शहर दोनों को छोड़ कर आना पड़ा। वह पिछले पंद्रह सालों से पुलिस महकमा में शामिल है। पुलिस महकमा में शामिल होने के बाद सात सालों तक वह एसपी के पद पर कार्यरत था। उसने इस बीच कई दशहदगर्द बागीयों का सफाया कर दिखाया। उसके इस काम के लिए उसे एंटी टेरिज्म स्क्वायॅड (एटीएस) आतंकवाद निरोधक दस्ता विभाग में एसीपी के पद पर नियुक्ति मिल गई। अब तक उसने चालीस मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दे दिया था।

वह निश्चिंतता के साथ सोया हुआ था। चिड़िया की टक-टक उसे जगाने का काफी प्रयास कर चुकीं थी, लेकिन उससे नामधारी को कुछ भी असर नहीं पड़ रहा था, लेकिन जब अलार्म की घंटी खर्राटे भरने लगी तब महामहीम नामधारी की निंद्रा भंग हुई।

जागते ही उसने अलार्म का आलाप बंद किया। खिड़की से झांक कर देखा तो शहर जाग चुका था। सूरज अपने तीखे भाव को प्रकट कर रहा था। सामने के बागीचे में स्वास्थ्य मंत्रालय अपना दैनिक कार्य सम्पन्न कर चुका था।

वह लीविंग हॉल में पहुंचा। नौकर को आवाज दी- "सरजू ..!"

“हां साहेब! आए रहे है ।” सरजू का जवाब आया। सरजू गांव का सीधा-सादा नौजवान लड़का था। गरीबी और बदहाली के कारण गांव छोड़कर शहर आना पड़ा।

नामधारी सोफे पर पसर गया और टीवी ऑन कर दिया। टीवी पर मिशन काला की खबर प्रसारित हो रही थी।

एंकर कह रही थी- “खौफ खत्म!, रातों रात ’काला गेंग’ का सफाया। इस गेंग ने कई निर्दोष लोगों की जानें ली, एक बस में आगजनी की जिसमें सात लोगों की जानें गईं। यह गिरोह कई दिनों से अपराधीक गतिविधियों को अंजाम दे रहा था। शहर में खौफ का माहौल था, लेकिन अब इस सक्रिय अपराधी गिरोह का एसपी नामधारी और उनकी टीम ने रातों-रात सफाया कर दिया। हमारे संवाददाता जो अभी उसी इमारत में मौजूद हैजो हमें सीधा कवरेज दे रहे है।”

(इमारत की वीडियो चलने लगी)

इतने में सरजू ब्रेकफास्ट ले कर आ गया। नामधारी टीवी पर आ रही अपनी तारीफों को देख रहा था।

सरजू अपने गांव की मीठी बोली में बोला-

“ वाह साहेब! उन बदमाशों का एनकाउंटर करके शहर में खौफ को खत्म कर दिये रहे। हम भी सहमे-सहमे से घर जातें रहे। आज से निडर होकर घर जाएंगे। वे सभी धरती पर बोझ रहे। अब कौनो दिक्कत नाहीं।”

“ हां सरजू ! पृथ्वी एक स्वर्ग है और यहां राक्षसों का कोई काम नहीं। राक्षसों को यमलोक पहुंचाने के लिए हम जैसे पुलिस हमेशा उनकी सेवा में हाजिर है।” ब्रेकफास्ट खत्म करते हुए कहा।

तभी फोन की घंटी घनघना उठी। नामधारी ने फोन रिसीवर किया।

रिसीव करते ही उधर से आवाज आई-

" हेल्लो एसीपी नामधारी! मिशन काला की जीत मुबारक हो।" फोन पर डीजीपी थे।

"आपका शुक्रगुजार हूं।" नामधारी ने कहा।

"मुझे कहते हुए बहुत खेद हो रहा है कि तुम्हारी छुट्टी रद्द की जा रही है।" डीजीपी ने असहजता से कहा।

" क्यों..? छुट्टी रद्द होने का कारण?"

" कारण एक मिशन है।!"

"कौन-सा मिशन?" नामधारी कुछ उत्तेजित हुआ।

"तुम्हे एक मिशन के लिए 'बलमा' शहर भेजा जा रहा है।" डीजीपी।

"क्या...बलमा!, उन बागीयों के शहर में, जहां हाथ बाद में और पिस्तोल पहले तान दी जाती है। उसी बलमा मे शहर जहां आग से आग जलाई जाती है।"नामधारी ने उत्तेजना में कहा।

"हां, उसी शहर में तुम्हे भेजा जा रहा है। मुझे यकीन है कि तुम उस एक बागी को खदेड़ दोगे। तुम अपनी टीम को लेकर कल ही तुम्हें बलमा के लिए निकलना होगा। मिशन का चार्ज तुम्हे सौंपा जा रहा है।" डीजीपी ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

"बलमा में ऐसी कौनसी वारदात हो गई?" नामधारी ने कहा।

"एक हत्या हुई है!"

" बलमा में किसकी हत्या हुई है?"

“बलमा जिले के एमएलए ‘रमननाथ बाघ’ की सरेआम हत्या कर दी गई।”

“रमननाथ बाघ की हत्या..।” सुनते ही नामधारी चौंक पड़ा।

“हां... इसके साथ-साथ उनके बेटे और ड्राइवर की सरेआम बड़ी ही बेरहमी से हत्या कर दी गई।” डीजीपी ने कहा।

“ इस हत्याकांड को किसने अंजाम दिया है?” नामधारी ने गंभीरता से पुछा।

“ खास बात यही है कि इन सभी की हत्याएं उस व्यक्ति ने की जिसे एमएलए रमननाथ जानते भी नहीं थे। उन्होंने तो उसका नाम भी नहीं सुना था।” डीजीपी ने कहा।

“वह कोई सुपारी किलर तो नहीं?”

“नहीं, उसका पिछला ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है। हत्यारा एक अमीर खानदान से ताल्लुक रखता है।”

“ आखिर एक अंजान व्यक्ति क्योंकर उनकी हत्या करेगा जिसका वें नाम भी नहीं जानते!” नामधारी।

“इसकी जानकारी तो बलमा में ही मिलेंगी। तुम अपनी ओर से जांच कर सकते हो।” डीजीपी ने कहा।

नामधारी ने कुछ पल रुक कर पुछा- “ क़ातिल का नाम क्या है?”

“धीरा पांडेय....!”डीजीपी ने कहा।

“मुझे क्या करना है?”

“वहीं जो तुम करते आए हो। उस धीरा पांडेय को शुट एंड ऑउट के ऑर्डर दिए जातें है।” डीजीपी।

“मिशन का नामकरण भी कर दिजिए।”

“मिशन बलमा!” डीजीपी ने नामकरण किया।

“ओके सर, मै मिशन बलमा पर जाने के लिए तैयार हूं, लेकिन मेरी टीम का एक मेम्बर मेडिकल इमरजेंसी के चलते देहरादून गया हुआ है।”

“तुम उसके लिए बेफिक्र रहो। तुम्हारे साथ एक नए क्रू मेम्बर को भेजा जा रहा है।”

“शुक्रिया सर!, मैं मिशन पर जाने के लिए तैयार हूं।” नामधारी ने हांमी भरते हुए कहा।

“ओके, मिशन बलमा की शुभकामनाएं।” डीजीपी ने बात खत्म करते हुए कहा।

“शुक्रिया सर!” नामधारी ने फोन रखते हुए कहा।

नामधारी ने सरजू को आवाज दी,

सरजू सफाई का काम छोड़ते हुए आया, “हां, साहेब!”

“मेरी छुट्टियां तो रद्द हो गई, लेकिन तुम्हारे लिए खुशखबरी है।”

“कौन खुशखबरी!” सरजू विस्मित स्वर में बोला।

“तुम्हारी कुछ दिनों के लिए छुट्टी। तुम कुछ दिन अपने गांव घुम आओ।”

“आप कहां जा रहे हो?”

“एक मिशन के लिए बलमा शहर जा रहा हूं।”

“बलमा...!” सरजू जैसे शहर का नाम सुनकर चौंक पड़ा।

“क्यों भाई..! इतना क्यों चौंक पड़ा।” नामधारी ने उसे असहज होते देख पुछा।

“क्योंकि मैं एक बार बलमा जा चुका हूं।”

“कब?”

“बालपन में एक बार मेरे दादाजी के साथ वहां गए रहे। उनका भांजा बलमा में ही रहता था। जब हम बलमा स्टेशन मा उतरे रहे तब दादाजी का भांजा हमें लेने आने वाला रहत।
कुछ देर में उनका भांजा वहां आया। उसकी कदकाठी बहुत ऊंची और मजबूत थी। उसके हाथ में ख़ून से सना हुआ एक चाकू था। उसने दादाजी को प्रणाम किया और बोला, “मामाजी..! हम अभी एक ऊपर पहुंचा कर आए रहे है। हमें आशीर्वाद दिजिए आगे भी ऐसी ही सफलता मिलती रहे।” उसको देख हम बहुत डर गए। हम वहीं से वापस अपने गांव की ट्रेन में बैठ गए। तब से आज तक हम वहां वापस नहीं गए।” सरजू उस पल की याद आने बहुत सहम गया था।

“तुम्हारे दादाजी का भांजा अब भी वहीं होगा?”

“नहीं, आपके जैसा पुलिस उसको मारने में सफल रहा।” सरजू ने कहा।

कुछ पल खामोशी के पश्चात नामधारी उसे कुछ जरूरी सामान की पैकिंग करने को कह कर नहाने चला गया।

अब टीवी पर चिल्ला-चिल्ला कर राशिफल बताया जा रहा था। नामधारी की कन्या राशि के अनुसार उसका पूरा सप्ताह चेलेंज और शरारतों से भरा हुआ था, लेकिन वह जीत और हार के बारे नहीं सोचने वालों में से नहीं था, वह तो सिर्फ लड़ना जानता था।

¶¶¶¶

रेलवे जंक्शन पर एलाउंसर अपने रेलवे टाइम के मुताबिक तेरह बजकर अड़तालिस मिनट की घोषणा कर रहा था। खचाखच भरे स्टेशन पर कोई अपनी ट्रेन आने का इंतजार कर रहा था; तो कोई भागते हुए अपनी ट्रेन पकड़ रहा था। ट्रेनें आ जा रही थी। ट्रेन का वह रोमांचित कर देने वाला सायरन; यात्रीगण में उत्साह पैदा कर रहा था। प्लेटफार्म पर लगें स्टॉल पर किशोर कुमार के गाने बज रहे थे।

स्टेशनों पर एक खास बात है कि यहां सभी दूरदराज़ स्थानों, रिति-रिवाजों, भिन्न वेशभूषा, भिन्न दृष्टिकोण, भिन्न जातिपंथ, भिन्न रंग-ढंग के लोग मिल जाते है, लेकिन फिर भी सभी एक से होते हैं। मंजिलें सब की अलग-अलग और लोह रास्ते और लोह सवारी समान होते हैं।

बहरहाल, नामधारी और उसके दो साथी विजय और शरद स्टेशन पर कदम रख चुके थे और किसी व्यक्ति के आने का इंतजार कर रहे थे। उनकी ट्रेन आधे घंटे में प्लेटफार्म पर आने वाली थी। सामने वाली चाय स्टॉल पर उसके मालिक नौजवान लड़के और एक भोपाली बुढ़े चच्चा में झगड़ा परवान चढ़ रहा था।

भोपाली झुंझला कर बोला-

“अमा! एक चाय के इतने पैस्से ले रहे हों। क्या चाय कुतुबमीनार पर बेच रहा है ?”

“चच्चा, तब चाय कुतूबमीनार पर पीने चले जाओ। यहां की चाय कुतुबमीनार से कम ना है।” नौजवान ने कुछ गरम होकर कहा।

“गजब लूट मचा रखी है; सीधा चूना लगा रहे हों।” भोपाली भी गरमाया।

अभी उनकी गरमाहट चल ही रही थी। तभी एक नौजवान लड़की नामधारी के सामने आकर खड़ी हो गई। उस लड़की ने सफेद शर्ट और काले रंग की जींस पहन रखी थी। उसकी पीठ पर बड़ा सा बेग और हाथ में सेब पकड़ रखा था।

नामधारी का ध्यान भोपाली चच्चा की गरम चर्चा पर था।

"हेल्लो सर! गूड़ आफ्टरनून।" लड़की ने नामधारी का ध्यान अपनी ओर खिंचते हुए कहा।

"हेल्लो.....!" नामधारी ने बिना देखें कहा।

लेकिन जल्द उसकी आंखें उसकी ओर दौड़ गई। उसने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, वह उसे पहचान चुका था। वह ड्रेगन स्क्वाड़ की मेम्बर 'नमीता' थी। वह उसकी उम्र के तीस बसंत देख चुकी थी। वह दिखाईं तो एक सीधी-सादी और खुबसुरत लड़की थी, लेकिन वह कई मिशन में अपनी काबिलियत दिखा चुकी थी। वह जब बोलती तो अच्छे-अच्छों की बोलती बंद कर देने वाली लड़की थी। उसकी तेज़ फुर्ती मुजरिमों को जमीन सुंघा देती। वह ड्रेगन स्क्वाड़ का हिस्सा थी लेकिन आज उसे नामधारी की टीम में भेजा गया था । पहले भी एक दफा नामधारी के साथ 'मिशन बावरा' को अंजाम दे चुकी थी। उस मिशन के दौरान दोनों में गहरी दोस्ती हो गई थी।

नामधारी उसे देख एकदम बोखला सा गया। वह उत्साहित होकर बोला-

"ओहो! नमीता, क्या तुम्हें न्यूटन स्क्वाड़ में भेजा गया है।"

"यस, आपके साथ कौन बेवकूफ काम नहीं करना चाहेगा।" नमीता ने सेब उछालते हुए कहा।

"हमारी टीम में तुम्हारा स्वागत है। मैं खुश हूं कि तुम्हें हमारी टीम में भेजा गया।" नामधारी ने कहा।

“तो वह तुम हो जिसका हम तीनों इंतज़ार कर रहे है।” शरद ने कहा।

“मेने उन्हें मेरा नाम बताने के लिए मना कर दिया था क्योंकि मैं तुम सबको सप्राइज देना चाहती थी।” नमीता ने मुस्कराते हुए कहा।

“हें...सप्राइज गर्ल....” नामधारी ने चुलबुले ढंग से कहा।

अभी चारों बात ही कर रहे थे कि उनकी ट्रेन अपने यथा स्थान और निर्धारित समय पर आ चुकी थी। ट्रेन पर लोगों का मजमा जमने लगा।

“ आपकी यात्रा मंगलमय हो।” एलाउंसर की मधुर आवाज़ आई।

¶¶¶¶

ट्रेन अपनी रफ़्तार से चल रही थी। खाली मैदानों और पेड़ों को पल भर में काटती ट्रेन सरपट दौड़ी जा रही थी। प्रथम श्रेणी के कोच की बर्थ पर बेठा नामधारी खिड़की से पलभर में नजरों के सामने से आते और गुज़रते नजारों को देख रहा था।

नमीता ने सैब खाते हुए कहा-

“ हम एक साल बाद एक साथ मिशन पर जा रहे हैं। मैं तो बहुत ही एक्साइटेड हूं।”

अपने बेग से एक सैब निकाल कर नामधारी की ओर बढ़ाया।

“ क्या आप सैब खाना चाहेंगे?”

“तुम और तुम्हारे सैब। दोनों एक जैसे हो। एक में बीज कम है और दुसरे में खामोशी कम है।” नामधारी ने हंसते हुए कहा।

“मैंने इस आदत को कम करने की बहुत कोशिश की, लेकिन छुटती ही नहीं।”

“क्या छोड़ने की! बकबक।” विजय ने मसखरी करते हुए कहा।

विजय की बात पर सभी हंसने लगे।

ट्रेन की घड़घड़ाहट चल रही थी। कुछ देर खामोशी छाई रही, लेकिन बातों की बाजीगर नमीता को बोझिलता पसंद नहीं थी। कुछ गंभीर होते हुए कहा।

“सर, मैं आपसे कुछ पुछना चाहती हूं?”

“पहले तो तुम मुझे सर मत कहो। अभी हम एक अच्छे दोस्त की तरह पेश आएं तो मुनासिब होगा। दोस्तों में.....। नामधारी रुका।

ट्रेन एक ब्रिज को क्रोस कर रही थी। उससे घड़घड़ाहट तेज हो गई थी जिससे चर्चा में खलल पैदा हो रहा था।

“ दोस्तों में राज़ जैसा कुछ नहीं होता। कहो ऐसा कौन-सा राज़ है जो तुम्हें खटक रहा है?”नामधारी ने बात आगे बढाते हुए कहा।

“ओके नामधारी! अखबार में छपी खबर के अनुसार ’मिशन 15/1’ को केवल आप अकेले ने अंजाम दिया था ऐसा उस अखबार में छपा था। आप अकेले ने पंद्रह आतंकीयों को मार गिराया था आपने यह कैसे कर दिखाया था?” नमीता ने पुछा।

नमीता की बात सुनकर तीनों के चेहरों पर दबी मुस्कान तैर गई।

”उस मिशन पर तो नामधारी ने जादू और दिमाग दोनों का इस्तेमाल किया था। जिसने नामधारी को रातों-रात हीरो बना दिया था।” विजय ने हंसी रोकते हुए कहा।

“ऐसा क्या हुआ था उस मिशन पर जिसने तुम्हें हीरो बना दिया?” नमीता ने सवाल दागा।

कुछ देर रुक कर नामधारी ने कहना शुरू किया।

“मैं तुम्हें मिशन 15/1 की कहानी सुनाता हूं।”

सुनो.... बात उन दिनों की है जब मुझे एटीएस में शामिल किया गया था। किसी मिशन पर भी भेजा जाता, हम उसमें बखूबी सफल हो रहें थे, लेकिन फिर भी हमें कुछ मिशन के ही चार्ज सौंपे जा रहे थे।

बहरहाल, करीब सालभर बाद दक्षिणी राज्यों में हो रही आतंकी गतिविधियों का ख़ात्मा करने के लिए एटीएस की दुसरी टीमों को वहां भेजे दिया गया, लेकिन मेरी टीम शहर में ही थी। इस बीच आतंकियों ने शहर के एक नामी मंत्री का अपहरण कर लिया, लेकिन एटीएस की दुसरी टीमें मौजूद नहीं थी। तब वह मिशन मुझे
हेंडओवर किया गया। मेरी टीम में हम चार लोग ही थे, लेकिन खबर के अनुसार वहां पंद्रह आतंकी मौजूद थे और मंत्रीजी की जान को भी खतरा था। मेने शूटिंग ट्रैनिंग सेंटर से आठ शूटर्स को टीम में शामिल कर लिया।

आतंकियों ने मंत्रीजी को एक होटल में रखा था। उस होटल के आसपास भी उसी ऊंचाई की समतुल्य इमारतें बनीं हुई थी। हम चारों उस होटल में दाखिल हुए। मैं बिना हथियारों के आगे चल रहा था और

बाकी तीनों मेरे कुछ फासलों पर चल रहे थे। प्लान के मुताबिक मैं उनकी हिरासत में आना था, इसलिए मैं उनके हत्थे चढ़ गया। वें मुझे उनके हेड के पास ले गए।

वह कमरा होटल का बाहरी हिस्सा था जिसमें मंत्रीजी की आंखों पर पट्टी बांध कर एक कुर्सी से बांध रखा था। इस कमरें से बाहर की इमारत साफ़ दिखाई दे रही थी।

मैं उस आतंकी के निशाने पर था। वह आतंकी जोर-जोर से ठहाके लगा रहा था और तबाही की बातें कर रहा था। मै उसे अपनी बातों-बातों में उलझा कर उस बालकनी के पास ले आया।

अब आठ आतंकी बालकनी के सामने और बाकी सात बाहर गस्त लगा रहें थे, जब मैं और वें आठ बालकनी के पास खड़े हुए, तब मेने एक इशारा किया और एक ओर हट गया। मेरे वहां से हटते ही आठ सायलेंसर लगी गन्स जो पहले से ही टारगेट पर निशाना साधे हुए थी उनसे एक साथ फायरिंग हुई और सातों ज़मीन पर ढेर हो गए।

जब मैं भागता हुआ होटल की सीढ़ियों पर पहुंचा तो वहां बचें सात आतंकी यहां वहां लुढ़के पड़े थे। सभी आतंकी मारें जा चुके थे।

जब मेंने मंत्रीजी की बंद आंखों से पट्टी हटाई तो वे वहां केवल मुझे पाकर हैरान हो गए। उन्होंने समझा कि मेने अकेले ने इन पंद्रह आतंकियों को मार गिराया है।

जब मीडिया ने मंत्रीजी से पुछताछ की तो उन्होंने मिशन पर उन पंद्रह आतंकी को मारने का पूरा श्रेय मुझ अकेले को दे दिया।

इस तरह अखबारों की खबरों ने मुझे रातों-रात हीरो बना दिया। इससे हमारी टीम को बहुत बड़ा फायदा हुआ। मेरी टीम को प्रमोट किया गया। हमें कई मिशन पर भेजा जाने लगा।

नमीता ने कुछ पल रुक कर कहा-

“क्या आपने जनता को अंधेरे में रखा, उन्हें बताया गया कि आप अकेले ने इस मिशन को अंजाम दिया?”

“मेने कभी किसी को अंधेरे में नहीं रखा। मेरे ना बोलने से किसी को नुकसान भी नहीं होने वाला था। लेकिन मंत्रीजी के अनजाने में दिए गए बयान ने हमारी टीम को फायदा जरूर पहुंचाया।” नामधारी ने कहा।

“आपकी टीम को क्या फायदा पहुंचा?” नमीता ने पूछा।

“हमारी काबिलियत को देखते हुए मेरी टीम को कई मिशन पर भेजा जाने लगा। हमने कई ऐसे मिशन को अंजाम दिया जिसने कई लोगों की जानें बचाई है।” नामधारी ने कहा।

“ मंत्रीजी ने हमारे वेतन में भी इजाफा करवा दिया।” शरद ने मसखरेपन में कहा।

“हां, यह सही रहा कि किसी को नुकसान भी नहीं हुआ और फायदा हुआ सो अलग।” नमीता ने हंसते हुए कहा।

सभी एक साथ हंस पड़े।

शाम होने वाली थी। ठंडी हवाओं के झोंके यात्रीयों को सुकून दें रहें थे। ट्रेन सायरन बजाती दौड़ी चली जा रही थी।

¶¶¶¶

सुबह होते ही सड़कों पर गाड़ीयां सरपट दौड़ रहीं थी। शाम को हुई बारिश ने सड़कों को धौ पोंछ दिया था। पक्षियों के झुंड आकाश की ऊंचाईयों को नाप रहें थे। लोग अपने प्रतीदिन के क्रियाकलापों में मश्गूल थे।

बलमा शहर एक पहाड़ी के आसपास बसा हुआ शहर है। उस पहाड़ी की चोटी पर कालीमाता का प्राचीन भव्य मंदिर है। पहाड़ी पर पवन चक्कियां मंथर गति से चल रही है। यह पहाड़ी ही बलमा शहर को खूबसूरत और आकर्षित बनाती है।

बलमा शहर की हवाएं इतनी गरम है कि यहां के नौजवानों का खून खोलने में देर नहीं लगती। ज़रा सी बकलोल करते ही यहां के नौजवान किसी पर तमंचा तानने में वक्त ज़ाया नहीं करते। इसलिए इन्हें 'बलमा के बाग़ी' भी कहा जाता है। यह बाग़ी बहकाव में यक़ीन रखते हैऔर बदलाव को उखाड़ फेंकते हैं, यहां की लाल मिट्टी की तरह इनका मिजाज भी पूरी तरह लाल स्याह हो चुका है।
बलमा शहर अपने आप में बगावत और अलगावों से भरा हुआ शहर है। यहां का पुलिस महकमा इन बाग़ीयों को कब का खदेड़ चुका होता, अगर इन बाग़ीयों को सियासतदारों का सपोर्ट ना मिला होता। कहने को यहां आला दर्जे के शिक्षा प्रतिष्ठान बने हैं, लेकिन यह बाग़ी सामाजिक विज्ञान में नहीं, नेताविज्ञान पर यकीन रखते हैं।

बलमा शहर की अच्छी खासी आबादी है। यहां पर दो तरह के मानुष रहते है। एक वे जो तमंचों की भाषा बोल सकते है और दुसरे वे जो इन्हीं तमंचों के सामने सिर उठाने की हिमाकत कर सकते है। बलमा की दो चीजें ही फेमस है। इन बाग़ीयों की आशिकी और इनकी आवारगी।

दोपहर होने वाली थी और तेज धूप खिली हुई थी। बलमा थाना के दरोगा मोहन मिश्रा किसी के आने का इंतजार कर रहे थे। वे दरवाजे की ओर ताक़ते हुए चाय की चुस्की ले रहे थे। मिश्राजी बार-बार थाने को चेक कर रहे थे कि कहीं कोई मिस्टेक से अव्यवस्था तो नहीं है, जब वे थाने के कोने-कोने को चेक कर रहे थे तो एक दीवार पर पान की पीक का वजूद कायम था। उन्होंने चिल्लाकर संतरी को आवाज लगाई।

" संतरी! क्या यह लाल लकीर अपने ससुरे के लिए छोड़ रखी है। इसे जल्दी से साफ करवाओ। सभी कामचोर है, ससुरे।"

संतरी भागता हुआ आया और लकीर को रगड़ने लगा।

सभी चीजों को व्यवस्थित पा कर ही उन्हें चैन आया। वह अपने कैबिन में अपनी चेयर पर बैठ पेपरवेट को हाथ से घुमाकर स्वयं को शांत करने का प्रयत्न करने लगे।

तभी मेनगेट के खुलने की आवाज सुनाई दी। मिश्राजी अपनी केप को ठीक करते हुए, भागते हुए दरवाजे पर पहुंचे।

मेनगेट पर सफेद इनोवा कार से नामधारी और उसके साथी अंदर प्रवेश कर रहे थे।

मिश्राजी भागते हुए कार के पास पहुंचे।

नामधारी ने थाने को उड़ती नजरों से देखा। थाने ने अच्छी खासी जगह घेर रखी थी। थाने के सामने मैदान था, जहां जंगली घास की चादर बिछी हुई थी। उसके दाईं ओर पीपल का पेड़ था। चारों ओर ऊंची दीवार बनी हुई थी। थाने की दीवारों पर लगा पीला पेंट चमचमा रहा था। दीवार मजबूत दिखाईं दे रही थी, दीवारें मानों अभी बोल उठें।

"वेलकम सर!" मिश्राजी ने अभिवादन किया।

"आप हो इस थाने के पितामह!" नामधारी ने पूछा।

"जी, मैं कुछ समझा नहीं?" मिश्राजी के माने बल पड़ गए।

"अरे....! क्या आप ही इस थाने के इंचार्ज हो?" शरद ने मिश्राजी स्पष्ट करते हुए कहा।

"यस सर! मैं ही थाने का इंचार्ज मोहन मिश्रा हूं।" मिश्राजी ने हड़बड़ाकर कहा।

नामधारी ने मिश्रा को ऊपर से नीचे तक देखा और सिर हिलाते हुए थाने में प्रवेश किया। लाॅकप में देखा तो वहां कैदी नदारद थे।

"क्या बलमा में अपराध दर शुन्य हो गया है? जो लाॅकप में एक भी कैदी नहीं।" नमीता ने लाॅकप की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हम यहां के मुजरिमों को सेंट्रल जेल भेज देते है। ताकि थाने में आकर कोई उपद्रव ना मचाएं।" मिश्राजी ने कहा।

"यहां कौन उपद्रव मचाता है?" नमीता ने पूछा।

मिश्राजी इशारा करते हुए कहा-

“आप जो ये खिड़कियों के टूटे कांच देख रही हो। ये उन उपद्रवियों के कारनामे है। वे अपने साथी की रिहाई के लिए किसी भी हद तक गुज़र जाते हैं। उन बागीयों की पत्थरबाज़ी से बचने के लिए, हमे ऐसा करना पड़ता हैं।”

हेड कैबिन थाने के पीछे वाले हिस्से में था। नामधारी जब कैबिन में पहुंचा तो थाने में लगे सायरन ने तीन बजने का एलान कर दिया। कैबिन की खिड़कियों से ठंडी हवा आ रही थी। खिड़की से बाहर देखने पर पहाड़ी का धुंधला चित्र दिखाई दे रहा था। पवन चक्कियां फड़फड़ा रही थी। धुंध में मंदिर चितकबरा नज़र आ रहा था। यह जगह पहाड़ी की तलहटी में स्थित थी। वह एक सुहावना दृश्य था।

नामधारी कैबिन की सीट पर विराजमान हुआ और बाकी सभी सामने वाली सीटों पर बैठ गए।

नामधारी ने मीश्राजी का रुख करते हुए पुछा

“अभी बलमा शहर के कैसे हालात हैं?”

“एमएलए रमननाथ बाघ की हत्या के बाद शहर में अराजकता फैल गई। लोग एक-दूसरे पर लाठियां चला रहे थे। शहर में धारा 144 लागू कर दी गई थी, लेकिन उसके बाद भी लोग शांत ना हुऐ। सड़कों पर आगजनी करते लोग और दंगाई शहर में कुण्डली मारकर बैठे थे। वे हम पर भी हमला करने से नहीं चुके, तब हमने स्क्वाड टीम को बुलाया। उन्होंने भीड़ को खदेड़ दिया। अब हालात हमारे काबू में है।”
मीश्रा ने हालातों का ब्योरा दिया।

“धीरा पांडेय की कुछ खबर?” नामधारी ने पूछा।

“वह वारदात को अंजाम देकर फरार हो चुका है। उसकी तलाश जारी है।”

“हत्या के वक्त मौका-ए-वारदात पर कौन मौजूद था?” नामधारी।

“यह वारदात सरेआम हुईं जहां कई सारे लोग मौजूद थे। उनमें से एमएलए का छोटा बेटा भी मोजूद था। जिसने धीरा पांडेय पर गोलियां भी चलाई, लेकिन धीरा पांडेय की गोलियों से वें नहीं बच पाए।”

“उसने इन सब की हत्या क्यों की होगी?”

“इसकी अभी कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। रमननाथ तो उसे पहचानते भी नहीं थे ” मीश्राजी।

“आपने इस केस पर जो भी तहकीकात की है उसकी फाइल लाकर दो।” नामधारी ने टेबल पर रखे पेपर वेट को कागजों पर रखते हुए कहा।

“ओके सर।” मीश्रा सिर हिलाते हुए उठा।

जब मीश्रा केबिन से बाहर निकल गया तब विजय ने कहा

“मुझे नहीं लगता कि इन्होंने केस पर ठीक से काम किया होगा। यहां का पुलिस महकमा किसी की दबिश में नजर आ रहा है।”

“मुझे भी यही लगता है। हम एक बार केस फाइल देख लेते है। उसके बाद ही एक्शन लेंगे।” नामधारी ने कहा।

नामधारी ने सरसरी नजर कैबिन में घुमाई। कैबिन की दीवारों पर कई महापुरुषों की तस्वीरें थी। जिनमें बोस के चश्मे पर धूल जमी हुई थी और बापू की तस्वीर तिरछी लटक रही थी।

कुछ क्षणों पश्चात् मीश्राजी अपने हाथ में एक फाइल ले कर कैबिन में दाखिल हुए, और फाइल नामधारी के सामने पेश की।

“ठीक है, आज टाइम बहुत हो चुका है। आज के लिए इतना ही बहुत है। हम केस पर कल सुबह डिस्कश करेंगे।” नामधारी ने खिड़की की ओर देखते हुए कहा।

नामधारी और उसकी टीम का होटल के एक फ्लेट में रहने का इंतजाम किया गया था। सभी अपने आवास पर रवाना हुए।

सुर्य अस्तांचल की ओर बढ़ रहा था। पहाड़ी से शीतल हवाएं चल रही थी जो सिरहन पैदा कर रही थी। धुंध में भी काफ़ी वृद्धि हो गई थी। शाम की रंगत खुशनूमा माहोल पेश कर रही थी।

¶¶¶¶

बादलों की काली कतरनें सुरज को ढकने का भरसक प्रयास कर रही थी, लेकिन सुरज की किरणे छन-छन कर जमीन पर आ रही थी। सड़कों पर गाड़ीयां दौड़ने लगी थी। घास पर जमा शबनम की बूंदें उड़ने लगी थी।

सुबह तड़के ही मिश्राजी थाने में हाजिर हो गए। वें रोज़ अपने व्यक्तिगत कामों को निपटा कर आते थे, लेकिन आज उन्हें हिदायत दी गई थी कि वें किसी प्रकार की गैरकानूनी हरकत ना करें। नामधारी भी कैबिन में बैठा था और उसके सामने मीश्राजी दोनों हाथों को बांधे कुर्सी पर बैठे थे। नामधारी उन्हें घूर रहा था।

“ मीश्राजी! ये कैसी तहकीकात की गई है? जिसमें ना तो क़ातिल की पूरी जन्म कुंडली है। ना ही किसी प्रकार का कोई पुख्ता सबूत और ना ही कोई पूछताछ की गई है।”

“हमनें तहकीकात कर ही रहे थे, लेकिन उस दौरान शहर में हफरातफरी मची हुई थी। जनता उबल रही थी और शहर में दंगें हो रहें थे।” मीश्राजी ने दबी जुबान से कहा।

“ठहरों....!, देखो मैं किसी प्रकार की बाहानेबाज़ी नहीं सुनना चाहता। तुमने केस पर किसी प्रकार का एक्शन नहीं लिया है। केस फाइल में ऐसी कोई इंक्वायरी नहीं दिखाईं दे रही है, जिसमें तुम केस के आसपास भी पहुंच पाए हों।” नामधारी ने त्योरियां चढ़ते हुए कहा।

“सारी सर!” मीश्राजी का चेहरा लटक सा गया।

कैबिन का माहौल गरमा गया था। खिड़की से आने वाली ठंडी हवाएं भी वातावरण को ठंडा करने में नाकाम साबित हो रही थी।

“सर, अब क्या किया जाए? इन्होंने तो अपना अधूरा काम करके केस से पल्ला झाड़ लिया।” नमीता ने कहा।

“अब आगे की तहकीकात तो हमें ही करनी है।”

नामधारी ने मीश्राजी का रुख करते हुए पुछा “धीरा पांडेय के क़रीबियों में कोई है जो हमें उसके बाबत कुछ बता सके।”

“उसके करीबी दोस्त और रिश्तेदारों में से हमें ऐसा कोई नहीं मिला। जो हमें उसके बारे में कोई खबर दे सकता था।” मीश्राजी ने कुछ सहज होकर कहा।

तभी नामधारी की नजर टेबल पर पड़े अखबार पर पड़ी। उस खबर में धीरा पांडेय की कुछ खबरें छापी गई थी। नामधारी ने उस खबर को पढ़ा जिसमें कुछ हद तक धीरा के बारे में जानकारी बताई जा रही थी।

“यह पत्रकार कौन है? इसने धीरा पांडेय को बहुत ही करीब से जाना है।”

“मैं इसे अच्छी तरह पहचानता हूं।”, मिश्राजी तपाक से कहा।

“कौन ?”

“मेरा मित्र ’माधव त्रिपाठी’ है। यह ‘उगता सूरज’ अखबार का चीफ पत्रकार है। माधव ने इस हत्याकांड की प्रत्येक ख़बर को कवरेज किया है। इसी पत्रकार ने उन भ्रष्टाचारो का भी पर्दाफाश किया था, जिसमें कई उच्च ओहदे के लोग शामिल थे।” मीश्राजी ने कहा।

नामधारी ने फाइल को खिसकाते हुए कहा

“तब तो समझो हमारा काम हो गया। मीश्राजी आपके पत्रकार दोस्त को बुलवाएं। अब वही हमें उस धीरा पांडेय की गुत्थी को सुलझाने में मदद करेगा।”

“मैं अभी उसे फोन करता हूं। यदि माधव शहर में ही होगा तो फौरन चला आएगा।” मीश्राजी ने नंबर डायल करते हुए कहा।

दोपहर होने वाली थी। सभी थाने में बैठे माधव का इंतजार कर रहे थे। माधव वह शख्स था जिसने कई अपराधीक गतिविधियों के कई काले चेहरों पर से नकाब हटा कर जनता के सामने उन्हें बेनकाब किया। वह केस की इतनी बारीकी से तहकीकात करता कि केस का काला सच ताश के महल की तरह बिखरकर सामने आ जाता। वह कई भाषाएं जानता और बोलता था, जब यह शख्स किसी मंत्री के सामने खड़ा हो जाता तो इसके सवाल मंत्रीयों को मिमीयाने पर मजबूर कर देते।

घड़ी के साईरन ने दो बजने का एलान किया, जब माधव ने थाने में प्रवेश किया। उसकी तीस के आसपास उम्र होगी। उसके शरीर का कद कम और गठीला बदन था। उसने बालों को छोटा कर रखा था जिससे उसका गोल चेहरा झलक रहा था। वह सीधा हेड कैबिन में दाखिल हुआ।

“गूड आफ्टरनून!” उसने कैबिन में बैठे सभी लोगों का अभिवादन किया।

बदले में वहां बैठे सभी लोगों ने भी अपने सिर को साठ डिग्री नीचे झुका कर उसका अभिवादन स्वीकार किया। मीश्राजी ने उसका सभी से परिचय करवाया।

माधव सीधा मीश्राजी से मुखातिब हुआ।

“आज पुलिस महकमे को कौन सी आफत आ गई? जो मुझ पत्रकार को याद फ़रमाया।”

“एक केस के सिलसिले में तुम्हारी मदद की आवश्यकता है। केस कुछ ज्यादा ही उलझ सा गया है।

“ऐसा कौन सा केस है?”

“एमएलए रमननाथ बाघ का केस!” नामधारी ने कहा।

“आगे बताओं।”

“ तुम इस केस की तहकीकात में हमारी मदद कर सकते हो।” मीश्राजी ने कहा।

“पत्रकार तो हमेशा जनता और जनता से जुड़े मसलों को सुलझाने के लिए तैयार है। आप बस हुक्म कीजिए।” माधव ने अपने अंदाज में कहा।

कैबिन में ठंडी हवा के झोंकें ने प्रवेश किया। सभी को कुछ सिहरन महसूस हुई। तेज़ धूप में पहाड़ी की धुंध नदारद थी।

नामधारी ने सामने बैठे माधव से कहा- “यह शहर उन बाग़ीयों के लिए मशहूर है। उनको खदेड़ने के लिए हमे तुम्हारी सहायता की जरूरत है। यह एक बड़ा मसला है। धीरा पांडेय जिसने सरेआम एमएलए रमननाथ,उनके बेटे और ड्राइवर की हत्या कर दी, जबकि रमननाथ तो उसको पहचानते भी नहीं थे। धीरा ने उनको इतनी बेरहमी से क्यो मारा होगा? उसकी एमएलए से कौनसी दुश्मनी रही होगी? क्यो उसने एक प्रतिनिधि की हत्या की?

लेकिन जब शहर की पुलिस तहकीकात करती है तो उसे धीरा पांडेय के बारे में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जो उस धीरा पांडेय और रमननाथ की आपसी जड़ों को सुलझाता है। हमें लगता है कि तुम उसे अच्छी तरह जानते हो। इसलिए तुम हमारी कुछ मदद कर सकते हो। अब तक जो भी उसके बारे कवरेज किया है, हमें उसकी प्रत्येक छोटी से छोटी बातों को बताओं, जिससे हम केस की तह तक पहुंच सके।

“ पुलिस और पत्रकार जनता के सेवक होते हैं। आप जनता को अंधेरे से सुरक्षा देने का काम करते है और हम जनता को अंधेरे से निकालने का काम करते है। पत्रकार केस से जुड़े हर पहलू पर काम करता है। इस केस के मुजरिम से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं। उसकी सारी कहानी आपको सुनाता हूं, लेकिन मै आप से कुछ आजादी चाहूंगा क्योंकि मै एक पत्रकार हूं और पत्रकार किसी किस्सागो से कम नहीं होता। खबर मे बिना भाषाई और किस्सागोई का मसाला डालें बिना मजा नहीं आता।

“तुम जैसे चाहो वैसे सुना सकते हो, मैं इसकी इजाजत देता हूं।” नामधारी ने मुस्कुराते हुए कहा।

कैबिन मे शीतल वातावरण हो गया था जिससे माधव ने अपने दोनों हाथों को रगड़ कर गर्माहट लाने का उपक्रम किया और अपना किस्सा सुनाने लगा।

¶¶¶¶

2

सुबह का समय था। आकाश में उड़ती धुंध ठहर चुकी थी और सूरज दमक रहा था। सडकों पर पीली बसे दौड़ रही थी। इस समय शहर के शोर-शराबें मे कुछ नरमी थी।

बाजार में चौराहे से सटे एक रेस्टोरेन्ट पर लोग चाय और अखबार का आनंद लेने पहुंच चुके थे। इस समय रेस्टोरेंट कुछ खाली-खाली था। आखरी कौने की टेबल पर नील और नीतेंद्र चाय की चुस्की ले रहे थे। दोनो ही हमउम्र थे। उनकी हेयर कट उन्हें नौजवानी का वरदान दे रही थी। रेस्टोरेंट का मालिक 'कृपाल' उनसे अच्छी तरह वाकिफ था। वह चाय की उबाल ठंडी कर रहा था। रेडियो पर प्यासा फिल्म का नगमा बज रहा था.. सर जो तेरा चक्राय या दिल डुबा जाए...आजा प्यारे पास हमारे काहे घबराए...।

रेस्टोरेंट को बहुत खुबसूरती से बनाया गया था ताकि ग्राहको को रेस्टोरेंट का वातावरण पंसद आए। सीढियों के आसपास गमले रखे हुए थे। उसकी छत से रंगीन झूमर लटक रहे थे। रंग-बिरंगी लाइट सजाईं गई थी। खूशबू के लिए बाहरी दीवार पर गुलाब और चमेली की बेलें लटक रही थी; जिससे रेस्टोरेंट मे खुशनुमा माहौल बना हुआ था।

नील ने चाय का कप रखते हुए कहा- “इस बार अपने कॉलेज के नये लडके कुछ ज्यादा ही इश्क की फुलझड़ीया जला रहे हैं। प्रोफेसरों ने भी इस मामले मे आंखें मूंद ली है। ऐसा चलता रहा तो बहुत जल्द ही कॉलेज को लव पॉइंट बना दिया जाएगा।”

“जब सीनियर्स ने इतनी आजादी दे रखी है तब हम क्या करें। उनको अपने रुबाब में पेश आना चाहिए था।” नीतेंद्र ने कुछ देर रूककर फिर कहा- “कॉलेज को छोडों यार!, हमारे अपने मुकेश का इश्क कंहा तक पहुंचा? उसके एक तरफा प्यार की कहानी कुछ आगे बढीं या नहीं?”

“हां, मै मुकेश को ही फोन लगा रहा हूं, लेकिन वह फोन पिक ही नही कर रहा है।”

“रोज इस समय पर रेस्टोरेंट पहुंच जाता है। आज पता नहीं कहाँ रह गया।” नीतेंद्र ने रेस्टोरेंट के आसपास देखते हुए कहा।

रेस्टोरेंट में अब भीड़ बढ़ने लगी थी। तभी मुकेश भागता हुआ रेस्टोरेंट मे पहुंचा। वह उन दोनो के पास पहुंचा। उसे इस हाल मे देखकर दोनों हडबडा गये।

“मुकेश क्या हुआ? तुम इतना घबराया सा क्यो हो? कौन सी आफत आ गई कि तु इस तरह घबराया हुआ है?” नीतेंद्र ने पूछा।

“ उ...सका भाई... ममम..मुझे मम..मारने आ रहा है। तु...म उ..ससे जल्दी उसे बुलाओ। वरना उसका भाई मुझे नहीं छोडेगा।” मुकेश हाफ रहा था और उसने दोनों हाथों को घुटने पर रखते हुए जवाब दिया।

“ तुम शांत हो जाओं। मै अभी उसे बुलाता हूं।” नील ने उसे साहस देते हुए कहा।

नील ने किसी को फोन लगाया। पहली रिंग जाते ही फोन पिक कर लिया गया।

“भाई...! तू जल्दी रेस्टोरेंट पहुंच। यहां थोड़ा लफडा हो गया है। जल्द पहुंच जा।” नील ने कहा।

अभी कुछ ही पल बीते होंगे। तभी रेस्टोरेंट के मेनगेट पर मेहरून रंग की टोयोटा धरधड़ाते हुए रूकी। उसमे सवार पांच लडके उतरे। सबसे आगे चल रहे लडके का हेयरकट और दाढी बहुत बढ़े हुए थे। उसके हाथ में हॉकी लहरा रही थी। रेस्टोरेंट की सीढियां चढते हुए सभी मुकेश के पास आकर रूक गये।

" बलमा शहर मे तुझे इजहार-ए-मोहब्बत के लिए एक मेरी बहन ही मिली थी। क्या सोच कर ऐसा किया? तुझे क्या लगा; गब्बर शाबासी देगा।" उस लड़की के भाई गब्बर ने कहा।

" द..द..देख गब्बर मैंने उसके साथ ऐसा कुछ नहीं किया। वह भी मुझ से प्यार करती हैं।" मुकेश ने नम्रता से कहा।

" देख गब्बर! इसने जो कुछ भी किया उसमे सिर्फ इसकी गलती तो नहीं। तेरी बहन भी इससे प्यार करती होगी।" नीतेंद्र ने सामने आकर कहा।

" अबे भूतिया...! तो क्या यह सब मेरी बहन ने किया है?" गब्बर ने करीब चिखते हुए कहा।

रेस्टोरेंट मे सभी लोगों की आंखें इनकी तरफ गढ़ गई। रेस्टोरेंट की भीड़ अब बड़ चुकी थी। महौल सुर्ख गर्म हो चुका था। सभी लोगों की आंखें इनकी तरफ़ ही ताक रही थी। भीड़ को तो बस ऐसा ही आंखों देखा हाल चाहिए होता है। जिससे उनका दिन शुभ माना जाता है।

" देख गब्बर तू हद से आगे बढ़ गया है।" नील उसे उंगली दिखातें हुए बोला।

गब्बर आगबबूला हो गया, उसने सामने खड़े नीतेंद्र को धक्का देते हुए जैसे ही हॉकी मुकेश पर तानी, अचानक रेस्टोरेंट के बाहर से शीशा टुटने की आवाज हुई।

छन्न....!!

गब्बर की टोयोटा का कांच छितराता हुआ चारों तरफ़ फैल गया। उस पर हॉकी से जोरदार प्रहार किया गया था। वहां एक शख्स हॉकी लिए खड़ा था। वह शख्स चिखा-

“खबरदार.....!!”

गब्बर की हॉकी हवा में ही रूक गई। उस शख्स को देखकर मुकेश की आंखें चमक उठी। वह उसका दोस्त ’धीरा पांडेय’ था।

धीरा रेस्टोरेंट की सीढियां चढने लगा। उसकी ऊंची कदकाठी, कानो को छूती हेयर कट, कसरती शरीर और मांसल भूजाए और हाथों मे लहराती हॉकी। उसके चलने का स्टाइल बता रहा था कि वह साहस से लबरेज़ है। वह तेज कदमों से गब्बर के सामने पहुंचा।

“ खबरदार..!, मुकेश को अगर खरोंच भी आई तो यहां से तुम अपने पैरों पर सीधे घर नहीं जा पाओगें।” धीरा ने हॉकी लहराते हुए कहा।

“ धीरा..! ,तुम इस मामले मे ना उलझो तो अच्छा होगा। इसने मेरी बहन के साथ ठीक नहीं किया।”

“क्या तेरी बहन लड़की नहीं है जो इसने उसके साथ कुछ बूरा किया। वह भी तो इससे प्यार करती है।” ,धीरा ने आंखें घुमाते हुए कहा।

धीरा के पीछे खड़े लड़के ने जैसे ही हॉकी तानी धीरा ने नीचे झुककर खुद का बचाव करते हुए, उसने उस लड़के को एक जोरदार लात जमाई। वह लड़का घसीटकर दुर दीवार से जा टकराया। उसकी ऐसी हालत देखकर सभी सकतें में आ गए। बाकी बचे तीनों ने एक साथ उस पर हमला किया, लेकिन धीरा के

साथ-साथ नील और नीतेंद्र भी झपट पड़े। भीड़ यह देखकर पीछे हटने लगी। सभी ने मिलकर उन तीनों को जमीन सूंघा दी।

गब्बर भी धीरा पर टूट पड़ा। धीरा ने अपना बचाव करते हुए गब्बर को एक तगड़ा घूंसा जमा दिया। घूंसा खाकर गब्बर थोड़ा हिल गया।

धीरा उसे एक घूंसा मारने ही वाला था; लेकिन मुकेश ने उसे रोक लिया।

"अब अगर इनके बीच मे आया तो मुझ से बुरा नहीं होगा। समझा अब चलता बन।", धीरा ने उंगली घुमाते हुए कहा।

गब्बर और उसके दोस्त उल्टे पैर अपनी कार की तरफ बढ़ गए।

मुकेश ने धीरा को गले लगा लिया।

"भाई!, तूने आज बचा लिया वरना पता नहीं आज ये मेरा क्या करते।"

" बस कर पगले, अब रूलाएगा क्या!", धीरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

"कृपाल भाई!, एक कड़कती चाय तो पिला दीजिए।"

अब रेडियो पर गुंडे फिल्म का गाना बज रहा था।

भीड़ छटने लगी थी। आज उनका दिन शुभ होने वाला था। मुकेश का प्यार परवान चढ़ने वाला था।

¶¶¶¶

बलमा शहर मे 'लाला राजनाथ' का बहुत दबदबा था। शहर के सरकारी महकमे उनके ही रीति रिवाजों से चला करते थे। शहर के बागीयों की फौज उनके एक इशारे पर बगावत पर उतर आती थी। सभी घटनाक्रम मे उनका हस्तक्षेप जायस था। लाला की बहुत सी जमींदारी भी थी जो शहर के आसपास के इलाकों और शहर से दुर भी मौजूद थी। कहा जाता है कि जब अंग्रेजों ने बलमा शहर को हथिया लिया था तब लाला के पिता ने शहर मे उनके खिलाफ बगावत कर दी जिसके चलते अंग्रेजों को शहर छोड़ना पड़ा था। उस बगावत के बाद शहर इनको अपना मसिहा मानता था।

शहर के बीचोबीच लाला का बंगला है जिसका नाम लाला के पिता के नाम पर 'अमर विला' रखा गया है। लाला राजनाथ के परिवार में कुल जमा चार सदस्य है जिसमें एक है - "धीरा पांडेय" जो इनके मरहूम दोस्त का बेटा है, जब धीरा दस साल का था तो इसके माता-पिता एक कार दुर्घटना में चल बसे।। धीरा का उनके अलावा कोई दूसरा नहीं था। तब से लाला ने ही उसकी परवरिश की थी। पंद्रह सालों से धीरा राजनाथ के साथ था, लेकिन अब अमर विला मे ना रहकर शहर में दुसरे मकान मे रहने चला गया।

दोपहर होने वाली थी, जब धीरा अपने वज्र वाहन 'राजदूत' से अमर विला पहुंचा। बंगले पर बहुत चहलपहल थी। शहर के उच्चे ओहदे के अधिकारी और आमजन भी मौजूद थे। लाला के पास वे अपने निजी कामों के लिए आते रहते थे।

धीरा ने सामने बने पार्किंग में अपनी राजदूत पार्क की। आंखों पर चमक रहे चश्मे को उतारा। अपने बालों को ठीक किया और अपने आप को ऊपर से निचे तक देखा टटोला, जब सब कुछ दुरुस्त देखा तो वह संतुष्ट हुआ।

वॉचमैन ने हल्का सा सिर झुका कर उसका अभिवादन किया। अभी वह चौबारे मे पहुंचा ही था कि सामने से आ रहे बेरिस्टर बाबू आते दिखें। बेरिस्टर बाबू जब भी मिलते कुछ झिड़कीयो का घोल पिला ही देते।

धीरा ने ना चाहते हुए भी विनम्रता से उनका अभिवादन किया।

" धीरा, आज बहुत दिनों बाद मिले। आजकल कुछ ज्यादा ही व्यस्त रहते हो। क्या शहर में कोई हमसफ़र मिल गया है?"

" नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। दरसअल दोस्तों के साथ वक्त का पता नहीं चलता।" धीरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

" दोस्ती के साथ-साथ अपने करियर पर भी फोकस करों। वरना दोस्तो का क्या है; बदलते रहते है।" ,बैरिस्टर बाबू ने अपनी झिड़कीयो की झलक प्रस्तुत की।

" बैरिस्टर बाबू, जिंदगी मे करियर ही सब कुछ नहीं होता। जिंदगी के सफर में दोस्त भी होने चाहिए।", धीरा ने सहमते हुए कहा।

" इस ऐज़ मे करियर जरूरी है; दोस्ती बाद मे भी की जा सकती है। तुम्हारी ऐज़ में हम हाईकोर्ट में प्रेक्टिस करने पहुंच गए थे।" बेरिस्टर बाबू बड़े गर्व से बोले।

धीरा को पता था कि वकिलों से बहस मे और पहलवानों से कुश्ती मे जीतना आसान काम नही है। उसने सिर हिला कर उनकी इस महत्वपूर्ण हिदायत मे अपनी सहमति जताते हुए कहा "आपकी सिख हमेशा याद रखूंगा।" कहता हुआ वहां से खिसक लिया।

धीरा चौबारे से होता हुआ राजनाथ के कमरे मे जा पहुंचा।

राजनाथ अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए थे। उनकी उम्र पचास-पचपन के इर्द गिर्द होगी, लेकिन शरीर से चुस्तदुरुस्त थे। सिर के बाल घनेरे और अधपके थे, लेकिन उनकी मूछें घुमावदार और रोबदार थी जो उनके खानदानी होने का जोर-शोर दावा कर रही थी। उन्होंने मलमल का हल्का पीला कुर्ता और सफेद पयजामा पहन रखा था।

कांच की टेबल पर कागजों का पुलिंदा रखा हुआ था और उसी के आसपास कुर्सियां रखी गई थी। धीरा ने राजनाथ के चरणस्पर्श किए। राजनाथ आंखें मूंदे अधलेटे थे।

धीरा के छूते ही उनकी आंखे खुल गई। धीरा के सिर पर हाथ रखा।

" धीरा...!, आ गया बेटे।"

"हां, बाबा।" धीरा राजनाथ को बाबा कह कर पुकारता था।

" क्या आजकल तुझे इतनी भी फुर्सत नहीं कि अपने बाबा से मिलने आ जाए?" , राजनाथ ने पूछा।

"ऐसी कोई बात नहीं।"

" तब क्या बात है?"

"अपनी रेशम मील पर मजदूरों ने झंझट खड़ा कर रखा था। उसी को सुलझाने मे लगा हुआ था। इन सब में समय का पता ही ना चला।" , धीरा ने कहा।

" मुझे पता है, कौनसी मील पर झंझट और झगड़े खडे हुए थे। दोस्तों के लिए ही कुछ करता रहेगा या अपने लिए भी कुछ करेगा। किसी से उलझनें में देर नहीं करता। अपना ख्याल रखा कर। दोस्तों के लिए तूने कई दुश्मन बना लिए है।"

" बाबा!, दोस्त ही दोस्त की मदद करता है। अपने दोस्तो के लिए इतना तो करना पडता है। उनके लिए मेरा इतना दखल तो बनता है।" धीरा ने सिर झुका कर कहा।

राजनाथ ने टेबल पर रखें समय सूचक यंत्र की ओर इशारा करते हुए कहा "इस समय यंत्र को देख रहे हो। इसमे केवल रेत ही नहीं फिसल रही, रेत के साथ-साथ तुम्हारी जिंदगी के मौके भी फिसल रहे है। इन मौको को हाथ से मत जाने दो। समय वापस लौट कर नहीं आएगा। तुम अपना समय दोस्तों के साथ-साथ अपने भावी भविष्य के लिए भी उपयोग करो।"

" ठीक है बाबा।"

कुछ पल रूक कर राजनाथ फिर कहा -" तुझे यहां हमारे साथ रहने मे क्या तकलीफ़ है? जब से यहां से गया है घर में तेरी कमी खलती है। मुझे कुछ तो बता! क्या किसी ने तुझे कुछ कह दिया? जो मुझसे दुर हो गया।" राजनाथ ने जोर देते हुए पूछा।

तभी सीढियों से उतरते हुई एक जनाना आवाज आई _ " मुझे पता है कि यह यहां क्यों नहीं रहता।"

यह है राजनाथ के घर की दुसरी सदस्य और इनकी धर्मपत्नी श्रीमती 'कौशल्या देवी'। जिनकी उम्र अडतालीस की होगी। कौशल्या एक स्वाभिमानी और भव्य औरत है। घर में गृहणी और नारी समाज में ओजवान महिला के रूप में प्रतिष्ठित है।

"क्यो?" राजनाथ ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ही पूछा।

"इसके यहां नहीं रहने का कारण है_ मेघना...!"

अब आप पुछेंगे कि यह मेघना कौन है? यह घर की तीसरी सदस्य -मेघना। मेघना राजनाथ की एकलौती बेटी है। इसी साल दिल्ली से अपनी एम.ए. की पढाई पूरी की और वापस अपने घर लौट

आई। पच्चीस-छब्बीस साल की निहायत खुबसूरत लड़की है। आजकल वह योगाक्लास भी जाती है जिससे उसकी खुबसुरती मे और भी इजाफा हो गया था। उसका शौक घर में नई-नई डिशेज बनाना और सबको खिलाना था। लेकिन उसमें केवल एक ही कमी थी, वह बहुत ही बिंदास और बेखौफ लड़की थी। जिस कारण अक्सर वह किसी झमेले मे उलझ पडती थी। यही कारण था कि उसके और धीरा के बीच कभी नहीं बनती थी।
एक बार किसी लड़के ने मेघना को प्रपोज किया तब धीरा ने उस लड़के की बहुत ही बारीकी से उसकी पीटाई कर ड़ाली, जबकि मेघना भी उस लड़के को पसंद करती थी और वह उसे अपना दोस्त बनाना चाहती थी। तब से दोनों एक दुसरे के जानीदूश्मन बने बैठे थे। इसी वजह से धीरा ने अपने रहने का इंतजाम शहर के दुसरे मकान पर कर लिया।

कौशल्या ने अपनी रेशमी साडी का पल्लू सम्भालते हुए कहा- "मैंने कितनी कोशिश की, लेकिन ये दोनो तो जैसे कसम खा चुके है। तेरे और मेघना के बीच में कुछ भी झगड़ा हो, लेकिन अपनी अम्मा लिए तो रह सकता हैना। मुझसे तो नाराज नहीं है।"

" नहीं, अम्मा!, आप से क्योंकर नाराजगी होगी।" धीरा चल कर उनके पास पहुंचा।

" कैसा है तू? "

"अच्छा हूं अम्मा, आपकी बहुत याद आती हैं।"

"तेरी शर्ट कितनी ढीली हो गई है! समय पर खाना खा लिया कर।" कौशल्या ने निरक्षण करते हुए कहा।

“ कुछ दिनों से डायटिंग पर हूं। इसलिए शायद शर्ट ढीली पड़ गई।”, धीरा ने शर्ट को फिटिंग करने का उपक्रम करते हुए कहा।

“ डायटिंग-वायटिंग के चक्कर मे मत पड़। तेरी उम्र अभी खाने-पीने की है। भोज करने की है।” कौशल्या ने झेपते हुए कहा।

“ठीक है मेरी अम्मा.... अब आप भी बेरिस्टर बाबू की तरह डांट ही खिलाओंगी या अपने हाथों से बना खाना भी खिलाओगी।”धीरा ने पेट सम्भालते हुए कहा।

कौशल्या ने धीरा को खाना परोसा। धीरा खाने पर टुट पड़ा। कौशल्या ने उसे एक नई डिश खीलाई जिसको देख धीरा पुछ बैठा- ” यह लाजवाब डिश किसने बनाई?”

“ यह मेघना ने बनाई है।”

मेघना का नाम सुन कर धीरा कुछ पल रुक गया, लेकिन उसने सोचा खाना अपनी जगह और झगड़ा अपनी जगह और वह लपक पड़ा।

खाना बहुत स्वादिष्ट बना था। धीरा ने उस डिश का नाम पुछा। तो कौशल्या ने मेघना से पुछने को कहा।

“ तब तो छोड़िए, कुछ भी नाम होगा मुझे तो स्वाद और खाने से मतलब।” धीरा ने डकार लेते हुए कहा।

“ कल से नवरात्र शुरू होने वाले है। तुम भी उत्सव मे शामिल होना।” कौशल्या ने कहा

“ अम्मा तुम्हें तो पता है मैं शिर्फ आपको ही अपना भगवान मानता हूं। मुझे किसी दुसरे भगवान को पुजने की कोई जरूरत नहीं।” धीरा ने बेबाक अंदाज में कहा।

" तुझे यकीन हो या ना हो, लेकिन तुम उत्सव तो मना ही सकते हो। नवरात्र की सारी तैयारीयां हो गई। तुझे नवरात्रि उत्सव मे शामिल होना ही पड़ेगा।" कौशल्या ने आदेशात्मक स्वर मे कहा।

" आपकी बात भला कैसे टाल सकता हूं। मै उत्सव मे जरूर शामिल होउंगा।" धीरा ने सिर झुकाते हुए कहा।

कौशल्या मुस्कुराते हुई रसोईघर मे चली गई।

धीरा जाने को हुआ तो राजनाथ ने पीछे से कहा " धीरा! अपने वक्त का सही इस्तेमाल करना सीखो।"

धीरा हामी भरता हुआ वहां से चल दिया। अभी वह पोर्च के बाहर पहुंचा ही था कि ऊपर बालकनी से एक गमला उसकी पीठ रगड़ता हुआ, जमीन पर छितरा गया। उसने झट से खुद को सम्भाला। ऊपर देखा तो मेघना बालकनी मे खडी थी। गमला उसी ने फेका था। वह उसे आंखें फ़ाड़ एकटक देखे जा रही थी। धीरा ने सामान्य लहजे मे बोला-

" ओफ्फो...! मेघना रानी का निशाना चूक गया। अफसोस! गमला बेकार ही जाया हो गया।"

" अगली बार मे पीठ का नहीं, तेरे सिर का इलाज करवाउंगी।" मेघना ने बेबाक अंदाज में कहा।

" ओहो! देखो तो ज़रा, चेहरा कैसा सुर्ख लाल हो गया है। होगा भी क्यो नहीं धीरा से जो पाला पडा है।" धीरा ने उसे लगभग चिढाते हुए कहा।

" दुसरा मौका देकर देख ले, तुझे दुसरे गृह पर नहीं भेज दूं तो मेरा नाम भी मेघना नहीं।" कहते हुए पैर पटकती हुई अंदर चली गई।

" मौका भी दे दूंगा।" चिल्लाता हुआ धीरा अपनी बाइक की तरफ बढ गया।

शाम होने वाली थी। बादलों ने अपना रंग और रूख दोनों बदल लिए थे। सड़कों पर लाल लाइटें भाग रही थी। धीरा ने अपना रूख घर की ओर कर लिया।

¶¶¶¶

बलमा शहर की सबसे बड़ी कालोनी नवविहार थी। जिसमें सभी अमीरो के उच्चे-उच्चे आशियाने बने थे। सडक़ साफसुथरी और सपाट थी। यहां सभी शासकीय व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही थी।

सुबह से स्वास्थ विभाग हरकत मे आ जाता था। और शाम को घुम्मकड़ आते-जाते नजर आते थे। रसोईघर से कमला ने आवाज लगाईं, जो धीरा के घर खाना बनाने और घर के दुसरे काम करने आती थी। धीरा उसे मौसी कह कर पुकारा करता। कमला की उम्र पचास पार कर चुकी थी। अपना जीवन व्यापन करने के लिए इस उम्र मे उसे घरेलू चाकरी का सहारा लेना पड़ रहा था। धीरा उसका बहुत आदर करता था। कभी कभी उसे कमला की तजुर्बाकार झिडकीयां भी खानी पडती थी। यही कारण था की कमला की एक आवाज सुनते ही उसे अपना बिस्तर छोड़, जल्दी से डायनिंग हाल मे आना पड़ा।

" मौसी, आज नाश्ते से बहुत अच्छी खुशबू आ रही है। ऐसा नाश्ते में क्या बना है?" धीरा ने बेसब्री से कहा।

" आज तेरे लिए बादाम का हलुआ बनाया है।"

" मैंने तो इन चीजों का मना किया है। ऐसी चीजें तो मैं छोड़ चूका हूँ।" धीरा ने अचरज से पुछा।

"तेरी मां ने कहलवाया है कि तुझे खिल्ला-पिला कर गोलमोल कर दिया जाए।" मौसी ने अपना मुंह फूला कर हंसते हुए कहा।

" अच्छा...!, मुझे मोटा कर दो फिर एक मोटी लड़की देखकर उससे मेरी शादी करवाने की साजिश हो रही हैं। आप सब ने बढ़िया प्लान बनाया है।" धीरा ने कहा।

" बेटा! तुम्हारे लिए तो चांद सी दुल्हनिया लाएंगे।" मौसी ने मुस्कुराते हुए कहा।

धीरा ने जल्दी से ब्रेकफास्ट खत्म किया। अपने फोन पर देखा तो नितेन्द्र का मेसेज आया था। जिसमें उसे योगाक्लास मे आने को कहा था।

वह जल्दी से तैयार होकर योगाक्लास के लिए निकलना चाहता था, लेकिन जैसे ही वह मेनगेट से बाहर निकला, सामने से बैरिस्टर बाबू आते दिखे। वह उनसे बचना चाहता था, लेकिन बिल्ली दुध मे अपना मुंह घूसा चुकी थी।

" क्योंजी सुबह सुबह सवारी कहाँ चली है? आओ हमारे साथ चलो, कुछ कसरत हो जाए।" हाथो को हिलाते हुए कहा।

" मै योगाक्लास ही जा रहा हूँ। कसरत वहीं कर लूंगा।" धीरा ने बचाव करते हुए कहा।

"कसरत करने जा रहा है या किसी की हसरत पूरी करने जा रहे हो।" बेरिस्टर बाबू ने कालिया वाली हंसी हंसते हुए कहा।

" नहीं-नहीं ऐसी कोई बात नहीं। रोजाना योगा करना भी जरूरी है।"

" हमे सब पता है, कौनसा गुणा-भाग करने जा रहे हो!"

धीरा ने सोचा " खूसट कहींका, खूद की हसरते पूरी नहीं होती है तो सब को अपने जैसा समझता है। मिल कहीं अकेले मे सिखाउं तुझे सारे गुणा-भाग।" लेकिन उसके पास बहसबाजी का समय नहीं था। उसने पीछा छुडाने के लिए टूटी-फूटी हंसी हंसते हूए अपनी गाड़ी स्टार्ट कर ली और आगे बढ़ गया।

चार मंजिला इमारत के टेरिस पर लड़कियां कतार बनाकर बैठीं थी। सभी अपने हाथो को धीरे धीरे हवा मे ऊपर-नीचे कर रही थी। उनके सामने योगा टीचर उन्हे निर्देश दे रही थी। कभी वह श्वशन योगा करवाती तो कभी किसी दुसरे किस्म का योगा। वहां एक शांत माहौल बना हुआ था। इन्हीं लड़कियों मे मेघना भी बैठी हुई योगा कर रही थी। उसने ढीले और आरामदेह कपड़े पहन रखे थे।

इमारत के सामने एक केफे मे मुकेश और नीतेंद्र बैठे चाय पी रहे थे, जब धीरा वहां आया तो दोनों उसके पास पहुंचे।

" यहां कौनसा भजन चल है जो मुझे बुलाया?" धीरा ने बाइक लगाते ही कहा।

" इश्क के भजन चल रहे है।" नीतेंद्र के मुस्कुराते हुए कहा।

" फिर कौन सा बवाल होने वाला हैं?"

" गब्बर !!" मुकेश ने कहा।

" उसे तो कल अच्छी तरह समझा दिया था।"

" नहीं समझा, वह आज फिर यहां भी आने वाला है। इसकी लवर ने बताया।"

" तब तो आने दो। देख लेगें।" धीरा ने कहा।

योगाक्लास की छुट्टी हो गई। लड़कियों का हुजूम ग्राउण्डफ्लोर से बाहर निकलने लगा, जब मुकेश की लवर बहार आई तो मुकेश उसकी ओर बढऩे लगा, लेकिन वह उसके सामने पहुंचता उससे पहले गब्बर वहां पहुंच गया। मुकेश वहीं बर्फ बन गया, लेकिन उसके पीछे आ रहे धीरा और नीतेंद्र नहीं रुके। उन्हें देख गब्बर तैश मे आ गया। उसका पारा सातवें आसमान पर चढ आया। वह अपनी बाइक से उतर भी ना पाया था।

" आज फिर बेवकूफी करने आ धमका। कल तुझे समझ नहीं आया।" धीरा ने बांहे चढाते हुए कहा।

" तुम सबको तो बाद मे देख लूगां।" इतना कहते हुए गब्बर और उसके दोस्त वहां से चल दिये।

"अब इन दोनों के बीच मत आना ,वरना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।" धीरा ने चेतावनी दी।

अब मुकेश और उसकी गर्लफ्रैंड के बीच कोई नहीं आने वाला था। वह प्रेमी युगल लॉगं ड्राइव के लिए निकल गया। धीरा और नीतेंद्र कैफे की ओर चल दिये।

मेघना दरवाजे की ओट से यह सारा तमाशा देख रही थी। उसे यह देख बहुत गुस्सा आ रहा था। वह धीरा को पीटते हुए देखना चाहती थी। जिससे उसके जलते दिल को कुछ ठंड़क मिल जाती। वह पैर पटकती अपनी स्कुटी की तरफ चल दी।

¶¶¶¶

शाम का सूरज ढलान पर था। आकाश मे गेरुआ रंग बिखेर रहा था। मां काली की पहाड़ी पर रंगीन लाइटें जगमगाने लगी थी।

मदिंर प्रांगण लोगों से खचाखच भरा हूआ था। माता के जयकारों की गूंज एक अजीब सा कंपन पैदा कर रही थी। बजते ढोल-नगाड़ों की ताल माहौल को ऊर्जावान बना रही थी।

जोर-शोर की इन आवाजों के बीच पुरोहित ने दिपमाला एक काला चोगा पहने शख्स के हाथों मे थमा दी। मां काली की महारती प्रारम्भ हुई। मदिंर प्रांगण लोगों की तालियों से सराबोर हो उठा। नगाड़ों की गडगडाहट दुर शहर के आखिरी कोने तक पहुंच रही थी।

करीब एक घंटे तक महारती चलती रही। महारती के पश्चात संगीत और नृत्य होना था। चौबारे पर बड़ा-सा मंच बनाया गया था। जिस पर नृत्य प्रारम्भ हो गया था। वह काला चोगा पहना व्यक्ति मुख्य अतिथि के आसन पर विराजमान था। यह शहर का प्रतिष्ठित व्यक्ति 'रमननाथ बाघ' था। उसकी उम्र पचपन के इर्दगिर्द रही होगी, लेकिन कदकाठी ऊंची और मजबूत थी। उसकी मूंछे उसकी दबंगई का ऐलान कर रही थी। रमननाथ के तीन बेटे थे। वर्तमान मे उसके दो बेटे ही जिंदा थे, बड़ा बेटा विदेश गया हुआ था, अचानक से वहां जान लेवा वायरस फैल गया, वायरस उसके बड़े बेटे को निगल गया। उसका अंतिम संस्कार भी नहीं किया जा सका था। फिलहाल उसके दो बेटे शिवनाथ और राजासिंह उसका कारोबार सम्भाल रहे थे। शहर मे उसके चार कारखाने और रियल स्टेट का बिजनेस था। शहर मे उसका खौफ भी कम नहीं था। उसने अपने गुंडाराज के बलबूते कई विवादित प्रोपर्टी को हथिया चुका था। बिजनेस की आड़ मे कई कालाबाजारी भी चल रही थी। लोगों मे उसके लिए भय पसरा हुआ था। इन कारणो से शहर मे उसके बहुत से दुश्मन पैदा हो गए थे। राजनाथ से उसकी पुरानी दुश्मनी थी, उसने राजनाथ के कारखानों पर अवैध होने का दावा कर ड़ाला था। जिसके चलते कारखाने को सालभर के

लिए बंद करना पड़ गया था। कारखाना तो फिर शुरू हो गया, लेकिन उनकी दुश्मनी आजतक बरकरार है।

उसके आसपास बॉडीगार्ड तैनात थे। जरूर उसे अपनी जान खतरा सता रहा होगा। लोग उसको भयज़दा होकर अभिवादन कर रहे थे।

मंच पर चार युवतियां नृत्य कर रही थी। वह अपनी भाव-भंगिमा से सबका मनमोह रही थी। संगीत अपना रंग बिखैर रहा था। यहां नवरात्र अलग ही ढंग से मनाया जाता था। हर दिन भिन्न आयोजन रखा जाता।

भीड़ को धकेते हुए धीरा और नीतेंद्र मंच के नजदीक पहुंचे। कौशल्या और राजनाथ नृत्य का लुत्फ उठा रहे थे। दोनों कौशल्या के पास वाली कुर्सियों पर पसर गए। संगीत की तेज आवाज मे चर्चा संभव नहीं थी।

नृत्य खत्म होते ही पर्दा गिरा। कुछ पलों के बाद पर्दा हटते ही मंच पर एक पौराणिक कथा रक्तबीज और माता काली के युद्ध का मंचन किया जा रहा था।

रक्तबीज नामक असुर हाथ मे तलवार लिए इन्द्र को ललकार रहा था।

“ हे! इन्द्र, मैं तुझे युद्ध के लिए आमंत्रित करता हूँ। आ मुझ से युद्ध कर।”

इन्द्र और रक्तबीज के बीच घमासान युद्ध छीड़ जाता है।

तलवारों की आपस मे टकराने की टंकार!! मंच एक रणक्षेत्र बन गया!!

लेकिन इन्द्र की तलवार रक्तबीज को जैसे ही छूती उसके रक्त की एक बूंद नीचे गिरते ही वहां सैकड़ों असुर पैदा हो जाते। युद्ध लड़ते-लड़ते मंच असुरों से भर गया।
इन्द्र को युद्ध छोड़ कर भागना पड़ा।

दृश्य बदलता है,
इन्द्र भागता हुआ मां काली के पास पहुंचा। मां काली से रक्तबीज का वध करने की प्रार्थना करता है। काली अपने दस हाथो मे तलवार, भाले, बरछी, आग धारण कर हुंकार भरती हुई रणक्षेत्र की ओर चल पड़ी।

रणक्षेत्र का दृश्य,
सामने रक्तबीज सैकड़ो की संख्या में मौजूद था। मां काली ने विराट रुप धरा, अपनी जिव्हा को बड़ा किया। वह जैसे ही असुर पर वार करती तो उस असुर के मूंड से निकला रक्त उनकी बड़ी-सी जिव्हा पर गिरता और असुर मारा जाता। इस तरह सभी असुरों का वध कर दिया, लेकिन उनका क्रोध शांत नहीं हो रहा था। वह असुर जाति का विनाश कर देना चाहती थी।

क्रोध शांत करने आए शिव!!
शिव ने काली का क्रोध शांत करने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन जब मां काली आगे बढती गई, तब शिव उन्हें शांत करने के लिए उनके मार्ग पर सो गए। जैसे ही मां काली ने शिव पर पांव रखा तब काली

का क्रोध एकदम शांत हो गया, और मां काली बहुत दुःखी हुई कि उन्होंने अपने पति पर पैर रख दिया। उनके नयनों से आंसू छलक पडे।
पर्दा गिरता है!

इस नाटक के माध्यम से मां काली और शिव के उस चित्र के रहस्य को प्रस्तुत किया गया था जिसमें मां काली ने शिव पर पैर रखा हुआ था।

प्रोग्राम खत्म हो चुका था। रात गहराने लगी, धुंध काफी बढ़ गई, जिस कारण पहाड़ी पर ठंड बढ़ने लगी। सभी अपने घरों की तरफ लौट पडे।

¶¶¶¶

सुबह के ठंडे झौंके धीरा की नींद को गहरा कर रहे थे। उसका फोन अब तक चार दफा बज चुका था, लेकिन वह इतनी नींद मे था कि उन्हें पिक नहीं कर सका। उसकी नींद तब खुली जब कमला मौसी खुद जगाने नहीं आई और कहा- " राजनाथजी का फोन आया था, तुझे बेरिस्टर बाबू से मिलने जाना है।"
इतना सुनते ही वह झट से उठ गया। उसने फोन देखा। फोन मे चार मिस्डकॉल आ चुके थे जो हर आधे घंटे मे राजनाथ ने किए थे। और अंत मे संदेश आया था।
संदेश मे सख्त आदेश था - " बेरिस्टर बाबू से एक फाइल लेकर जल्द आओ।"

धीरा की मजबूरी थी कि सुबह-सुबह ही उसे बेरिस्टर बाबू का दीदार करना था। वह उनके घर के मेनगेट पर पहुंचा और खुद को व्यवस्थित करके, घर की बेल बजाई।

कुछ देर बाद दरवाजा खुला। दरवाजा एक नौजवान लड़की ने खोला था। लड़की निहायत खुबसूरती की मिशाल बन कर सामने आई थी। उसके बदन से उम्र का अल्हड़पन झलक रहा था।

धीरा उसे घूरता ही जा रहा था। उसे इसकी ज़रा भी उम्मीद नही थी।

जब घूरने की सीमा समाप्त हो गई तब उस लड़की ने पुछा "हां, बोलिए। आपको किससे मिलना है?"

धीरा का उसके प्रशन पर ज़रा भी ध्यान नहीं गया।

"ओ हेल्लो...!, आप मुझे बताएंगे कि आप कौन है? किससे मिलना चाहते है?" लड़की ने चुटकी बजाते हुए कहा।

"मेरा नाम धीरा है। मैं बेरिस्टर बाबू से मिलने आया हूं।" धीरा ने होश मे आते हुए कहा।

" बेरिस्टर बाबू से यानिकी आप फूफाजी से मिलने आएं है।"

धीरा ने मन मे सोचा " वो खूसट बूढ़ढा इस खुबसूरत परी का फुफा लगता है।"

" हां, वे आपके फुफा या मौसा जो कुछ भी लगते हो, मैं उन्हीं से मिलने आया हूँ।"

" वे अभी नहा रहे है।" लड़की ने से कहा

"क्या आप मुझे अंदर आने की इजाज़त देंगी?"

लड़की कुछ देर सोच में पड़ गई। उसे असमंजस में देख धीरा ने कहा "आप इतना क्यों सोच रही हो। वे मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं।"

"ठीक है, अंदर आइए।"

वह पहली दफा उनके घर गया था। घर छोटा ही था, लेकिन उसकी साज-सज्जा पर बहुत ही बारिकी से ध्यान दिया गया था। घर की छत से झुमर लटक रहे थे। घर का वातावरण खुशनुमा था। दिवारों पर

तरह-तरह की पेंटिंग्स करवाई गई थी। एक तख्ती पर वकालत मे मिले मैडलो को खुबसूरती से रखा गया था। सामने की दीवार पर उनके बाप-दादो की तस्वीरें लगी हुई थी। उसी दीवार पर एक और तस्वीर लगी हुई थी जिसमें एक आधी जली हुई औरत की फोटो थी, जली होने के कारण वह बहुत डरावनी लग रही थी उस पर माला पड़ी हुई थी। जिसे धीरा कुछ देर देखता रहा फिर सोफे पर पसर गया।

“आपका नाम क्या है?”

“हमारा नाम अंजू है।”

“हमारा मतलब... और कोई भी साथ में हैक्या!” धीरा ने उपहास किया।

अंजू भी कुछ शरमा सी गई

“हमारा...कहने की आदत सी है।”

“ तो आदत सुधारों। नहीं तो लोग उल्टा ही समझेंगे।”

“आप चाय पीएंगे।”लड़की ने आग्रह किया।

“ हां, जरूर पीऊंगा। पहली बार बेरिस्टर बाबू के घर आया हूँ।” धीरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

“हम...नहीं मै अभी बनाकर लाती हूं।” कह कर लड़की चाय बनाने चली गई।

कुछ देर मे बेरिस्टर बाबू सिर पर तोलिया रगड़ते हुए आ गए।

“ धीरा... तुम आ गए।”

“ नमस्ते, बैरिस्टर बाबू।” धीरा ने अनमने ढंग से कहा।

“ सुप्रभात!” कहते हुए उन्होंने आवाज लगाई।

“ अंजू बेटी!, चाय लाना।”

" अंजू मेरी भतीजी है कुछ दिन पहले ही यहां आई है,अब से यही रहेंगी। इसी शहर मे कालेज मिल गया है। इसकी बुआ मंदिर गई है, आती ही होगी।"

अंजू चाय लेकर आई। धीरा को चाय थमाते हुए जाने लगी तो बैरिस्टर बाबू ने रोका।

" अंजू बेटी, यह धीरा है। हमारे पड़ोस मे ही रहता है। यह सेठ राजनाथजी के बेटे जैसा है।"

" हां , मै इनसे मिल चुकी हूं।"

" कब ?"

"अंजू ने ही दरवाजा खोला था।" धीरा ने कहा।

" अच्छा। अंजू बेटी, तुम्हें कालेज का कोई भी काम करवाना हो तो धीरा से कह देना। इसकी कालेज में अच्छी पहचान है। यह तुम्हारे सारे काम करवा देगा।" बेरिस्टर बाबू ने पहली बार धीरा की सरहाना करते हुए कहा।

कुछ देर खामोशी छाई रही फिर धीरा ने उस तस्वीर की ओर इशारा करते हुए पूछा "यह तस्वीर किसकी है?"

कुछ मायूस लहज़े में बेरिस्टर बाबू ने जवाब दिया "यह मेरी महरूम बहन की बीस साल पुरानी और आख़री तस्वीर है।"

"क्या जलने से उनकी मौत हुई थी?"

"हां, वह आग इसके ससुराल वालों ने लगाई थी। उन बेरहम लोगों ने मेरी प्यारी बहन को बड़ी ही बेरहमी से मौत के हवाले कर दिया।" बेरिस्टर बाबू की आंखें नम हो चली।

उन्हें उदास होता देख धीरा ने अफसोस जताते हुए कहा "माफ करना मुझे पता नहीं था।"

“ मैं साल में एक बार उन बेरहम लोगों को देखने जेल जाता हूं, जिससे मेरे मन को कुछ तसल्ली और सुकून मिल जाता है।”

कमरा एक बार फिर बोझिल हो गया। बेरिस्टर बाबू कुछ संभल गए तब धीरा ने काम की बात पर आते हुए कहा “ मुझे वह फाइल दे दिजिये। उसे बाबा को सौंपना है।”

“ हां... यह रही वह फाइल।” बेरिस्टर बाबू ने साइड में रखी फाइल दी।

धीरा फाइल लेकर उनसे जाने की इजाज़त मांगी। उसने एक बार अंजू को देखा। अंजू ने भी उड़ती नज़रों से उसे देखा। वह उसे गेट तक छोड़ने आई।

“धीरा जी... तो मेरा कालेज में एडमिशन कब करवा रहे हो।”

“कॉल मी धीरा... ओके। कल करवा दुंगा।”

“आप क्या बिजनेस करते हो?” अंजू ने पूछा।

“ हमारी शहर में चार मिल्स है। मै उन्हें मेनेज करता हूँ।”

“आपकी शादी हो गई?”

“ नहीं, ऐसी कोई लड़की ही नहीं मिली।” धीरा ने कहा।

“ आपको कैसी लड़की चाहिए?”

धीरा उसे इस तरह के प्रशनों की कोई उम्मीद नहीं थी। उसने कुछ सोच कर कहा

“ कल मिलों तो बता दूंगा।”

“ मेने तो ऐसे ही पूछ लिया।” अंजू ने अपनी अदायगी से कहा “आप कुछ ज्यादा ही तेज़ हो रहे हो।”

“ तुम भी तो कम नहीं।” धीरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

कुछ देर सोचने के बाद कहा ” कल सुबह योगाक्लास पर मिलें।”

“ ओके, अंजू।” कहता हुआ धीरा अपनी बाइक पर बैठ गया।

करीब दस बजे बंगले पर पहुंचा तो वहां शहर का मंत्रीमंडल और उच्च तमगे के व्यक्ति आए हुए थे। धीरा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह बिना देरी किए बंगले मे घुस गया। मीटिंग हाल मे पहुंचा तो वहां कई ऊंची हस्तियां विराजमान थी। धीरा को देखते ही राजनाथ ने उससे वह फाइल मांगी। धीरा ने वह फाइल उन्हें सौप दी। और वापस बाहर निकल आया।

कुछ देर बाद मेनगेट पर मिडिया रिपोटर्ँस की भीड़ जमा होने लगी। करीब दो घंटे तक मीटिंग चलती रही। जब मीटिंग खत्म हुई और मंत्रीजी और राजनाथ बाहर आए।

मंत्रीजी मीडिया से रूबरू हुए।

“ मंत्रीजी, इस बार विकाशवादी पार्टी से एमएलए का टिकट किसको दिया जा रहा है?” मीडिया का प्रथम प्रशन।

“ इस बार हमारी पार्टी उसी को टिकट दे रही है जो आम आदमी के साथ हो रहे भ्रष्टाचार को खत्म करेगा और विकास की धारा हर घर पहुंचेगी। हमारी विकाशवादी पार्टी जनता की समस्याओं को खत्म कर विकासशील करती है।” मंत्रीजी ने ठंडे लहजे मे कहा।

“ आपकी पार्टी का उम्मीदवार कौन होगा?” मीडिया

“ मैं विकाशवादी पार्टी के एमएलए के रूप मे ’श्री राजनाथ जी’ को पार्टी का उम्मीदवार घोषित करता हूं।”

घोषणा सुनते ही वहां उपस्थित सभी लोगों के चेहरो पर खुशी खिल आई। धीरा एकदम भौचक हो गया। उसे बहुत खुशी हो रही थी। उसे इसका ज़रा सा भी अंदाजा नहीं था।

मीडिया ने अपने-अपने माइक राजनाथ की ओर घुमा दिए।

“ राजनाथ जी, आपको प्रत्याशी चुने जाने की बहुत शुभकामनाएं।”

“धन्यवाद।” राजनाथ ने आभार प्रकट किया।

“आपको एमएलए का टिकट मिलने पर कैसा लग रहा है?”

“मै बहुत गोरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मै शुक्रगुजार हूं कि मंत्रिमंडल ने मुझे यह मौका दिया।”

“ जनता के लिए आपके क्या-क्या मुद्दे होंगे?”

“ बलमा जिले में शासन के प्रति चल रही अराजकताओ का समाधान करना जो भ्रष्ट प्रतिनिधि के गलत मार्गदर्शन के कारण उपजी है। जनता को मे विश्वास दिलाता हूं कि अबतक उनके साथ हुए अनैतिक व्यवहार का विनाश कर, उन्हें विकास की ओर अग्रसर किया करूंगा। ध्यवाद।”

“ जानकारी देने के लिए आपका ध्यवाद।” कहते हुए मीडिया रिपोटरँस विदा हो गए।

सभी लोग राजनाथ को शुभकामनाएं देकर विदा हुए। सबके जाने के बाद धीरा अपनी खुशी को रोक नहीं पाया और दौड़ता हुआ राजनाथ के गले लिपट गया।

" बाबा..मुझे कितनी खुशी हो रही है, मै आपको बता नहीं सकता।

कौशल्या और मेघना भी बहुत खुश थी। आज अमर विला मे खुशी का माहौल था। दिनभर राजनाथ से उनके दोस्त और ऊंचे तमगे के लोग मिलने आए,उन्हें अपनी शुभकामनाओं से नवाजा।

¶¶¶¶

दुसरे दिन सुबह धीरा योगाक्लास पहुंचा। काफी देर से चाय कैफे मे बैठा योगाक्लास खत्म होने का इंतजार करता रहा, जब योगाक्लास खत्म हुई तो बाहर निकलती मेघना ने उसे देख लिया। धीरा उससे बचना चाहता था, इसलिए वह चाय कैफे पर ही रुका रहा। जब मेघना चली गई तो कैफे से निकल कर अंजू का इंतजार करने लगा। कुछ देर बाद अंजू बारह निकली। धीरा उसे देख कर भौंचक रह गया। कल अंजू ने सलवार कुर्ती पहन रखा था जिससे उसका फिटनेस नहीं दिखा, लेकिन आज अंजू टीशर्ट और लेगी में बहुत हॉट लग रही थी। उसकी खुबसूरती को देख धीरा मचल उठा। धीरा ने उसकी तरफ हाथ हिला कर उसे पास आने का इशारा किया। अंजू ने उसे देखा और एक घायल कर देने वाली मुस्कान दी।

धीरा ने उसे बुलेट पर बिठाया और वहां से चल दिए।

शहर के दक्षिणी क्षेत्र मे तालाब था। तालाब के किनारे दशकों पुराना किला बना हुआ था। वह पुराना किला खुबसूरत और मजबूत था। तालाब में तैरती नाव पर सवार प्रेमी-प्रेमिका प्रेम विहार करते और घंटों वहां बेठकर बातें करते तालाब की खुबसूरती का लुप्त उठाते।

आकाश मे बादलो मे दौड़ने की होढ़ मची थी। हल्की बारिश हो रही थी। तालाब के ऊपर मानो धुंध उड़ रही हो। नावों का जत्था किनारे पड़ा बलखा रहा था। धीरा और अंजू किले में एक गुंबद तले बेठे तालाब को निहार रहे थे। नाविक अपनी नाव की रस्सियों को छोड़ रहे थे। धुंध इतनी हो रही थी कि तालाब के दुसरी ओर बसे गांव को देखना मुश्किल हो रहा था।

दोनों के बीच कुछ पलो की खामोशी छाईं रही। उस खामोशी को तोड़ते हुए धीरा ने कहा

" क्या तुम्हे मुझ पर भरोसा है?"

" हां।" अंजू ने तालाब से नजरें हटाएं बीना कहा।

" कैसे? आज हमारी दुसरी ही मुलाकात है!"

" मैं तुम्हे जान चुकी हूं।"

" कैसे..?" धीरा ने उसकी आंखों मे देख कर पुछा।

" मेरी फ्रेंड ने बताया। तुमनें उसकी और उसके बॉयफ्रेंड की जान उन गुंडों से बचाईं थी; जो उसके बाप ने ही उसके बॉयफ्रेंड को मारने भेजे थे। इसलिए मुझे तुम पर भरोसा है।"

"तुमने मुझमें ऐसा क्या देखा लिया?"

“यहीं कि जो दुसरो के प्यार के लिए किसी से भी भिड़ सकता हो वो खुद के प्यार के लिए किस हद तक जा सकेगा।” अंजू ने उसे बिना देखें ही कहा।

“ क्या तुम्हे मुझ से प्यार है?” धीरा ने आंखें मिलाते हुए कहा।

“ अभी तो नहीं, लेकिन हो सकता है। हमे एकदुसरे को समझने का वक्त देना चाहिए।” अंजू ने कहा।

“ तुम चाहती हो कि पहले मैं तुम्हे पूरा शहर घुमाऊं, तुम्हारा इंतजार करूँ, शॉपिंग करवाउं।” धीरा ने तालाब में पत्थर फेंकते हुए कहा।

“ हां, शॉपिंग तो करवानी ही पड़ेगी। प्यार का फल इंतजार के बाद ही मिलता है।” अंजू ने कहा।

“ ठीक है। इस फल के लिए तो मैं कुछ भी करूंगा।”

दोनों मुस्कुराने लगे।

“ हमें अब चलना चाहिए। फुफाजी नाराज होंगे।” अंजू हडबडा उठी।

“ उस बुड्ढे की.....।” धीरा ने तिलमिला कर कहा।

“ खबरदार! जो मेरे प्यारे फुफा के बारे में कुछ कहा तो।” अंजू मुंह फुला कर बोली।

“ओहो.... प्यारे फुफाजी...। खूसट कहींका...।” धीरा ने धीरे से कहा।

“ क्या कहा तुमने?” अंजू ने त्योरियां चढा कर पुछा।

“ कुछ भी तो नहीं।” धीरा ने ना कहना ही खैर समझी।

“ चलो चलते हैं।” धीरा ने आखिरी पत्थर तालाब में फेंकते हुए कहा।

तालाब में पत्थर फेंकने से हिलौरे उठी और किनारे से टकरा गई। हवा धुंध लिए उड़ रही थी, मानो दोनों को रूकने का इशारा कर रही हो।

¶¶¶¶

3

सुबह होते ही बंगले पर राजनाथ के समर्थक इकट्ठा हो गए। आज इलेक्शन नोमिनेशन फार्म भरने जाना था। बंगला लोगों से खचाखच भरा हुआ था। धीरा आज जल्दी ही बंगले पर पहुंच गया। सबको यह खबर मिल गई कि विपक्ष पार्टी ने एमएलए का टिकट शहर के दिग्गज व्यक्ति 'रमननाथ बाघ' को दिया है, लेकिन लोगों मे राजनाथ के नाम की ज्यादा लहर थी। शहर के दोनों दिग्गज आज इलेक्शन के मैदान में आमने सामने थे।

काफिला कलेक्टर भवन के लिए चल पड़ा। सडक पर गाडियों की लम्बी लाइनें लग गई। जोर-शोर से नारे लगाएं जा रहे थे। सड़कों पर जाम सा लग गया। नौजवान परचम लहराते नजर आ रहे थे। रास्तेभर हुडदंग मची रही।

दोपहर होते होते कलेक्टर भवन पहुंचे। वहां रमननाथ का काफिला भी पहुंच चुका था। नियमों का पालन करते हुए शोरशराबा थम गया। कलेक्टर भवन में राजनाथ और मंत्रीजी ने प्रवेश किया। उसके बाद रमननाथ और उनके मंत्रीयों ने प्रवेश किया। बाकी लोग भवन के बाहर ही ठहर गये।

दोनों पक्षों के लोगों ने कलेक्टर महोदय का अभिवादन किया। कलेक्टर साहब ने सभी का अभिवादन किया।

कुछ ही देर में कागजी कार्यवाही होते ही कलेक्टर साहब ने दोनों प्रत्याशी को नोमिनेशन फार्म पर हस्ताक्षर करने को कहा। राजनाथ ने नोमिनेशन पर हस्ताक्षर किए और फार्म कलेक्टर साहब को सौंप दिया। कलेक्टर साहब ने नोमिनेशन लेते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। रमननाथ ने भी आपना नोमिनेशन कलेक्टर साहब को सोंपा।

नोमिनेशन देने के बाद बाहर आते ही रमननाथ और राजनाथ आमने सामने मुखातिब हुए।

" राजनाथ....! जंगल में राज तो शेर ही करते है। और शेर.. आखिर शेर ही होवत है।" रमननाथ गरुर भरे शब्दों मे बोला।

" राज तो कमजोरों पर किया जाता है, रमननाथ। शेर गीदड़ों पर कितना ही उछल ले, लेकिन वह मदमस्त हाथी से कभी पंगा नहीं लेता।" राजनाथ ने जवाब दिया।

" जंगल का यही कानून होत है, जिसकी दहाड़ तेज, राज उसी का।" रमननाथ ने गम्भीर मुद्रा मे कहा।

" यह तो वक्त ही बताएगा कि किसकी आवाज से जंगल गूंजेगा।" राजनाथ ने आगे बढ़ते हुए कहा।

" हमरी शुभकामनाएं।" रमननाथ ने कहा।

" तुम मेरे सबसे अच्छे शुभचिंतक हो।" राजनाथ ने अपना आखिरी तीर फेंका।

कलेक्टर भवन से निकलते ही काफिला बंगले की ओर बढ़ गया। रंग गुलाल उड़ाते कार्यकर्ता मस्ती मे झुम नाच रहे थे।

¶¶¶¶

योगाक्लास खत्म होते ही मेघना ग्राउण्ड फ्लोर पर पहुंची तो सामने चाय कैफे पर धीरा और नीतेंद्र दिखाई पड़े। उन्हें वहां देख कर मेघना को शक हुआ। बाहर निकलने के बजाय पार्किंग मे ही खडी हो गई। कुछ देर बाद अंजू निकली और धीरा के पास चली गई। दोनों वहां से निकल गए। नीतेंद्र वहीं रुका रहा। मेघना दोनों को साथ जाते देख जलभुन गई। सोचने लगी। अंजू जैसी लड़की धीरा के बहकावे में कैसे आ सकती है। उसके खुरापाती दिमाग मे तरह-तरह के ख्याल आने लगे। दोनों को अलग करने की तरकीब सोचने लगी।

धीरा और अंजू दोनों महारानी होटल पंहुचे। होटल के सामने गार्डन था। उसके बीचोबीच फव्वारा बनाया गया था। गार्डन में बैठ दोनों में बातें होने लगी। वेटर आया और आर्डर ले कर चला गया। अंजू ने अपने लिए चाकलेट आइसक्रीम मंगवाई और धीरा ने काफी पीना पसंद किया।

"अंजू.... तुम अपनी लाइफ के बारे में कुछ बताओं।"

" क्या बताऊं?"

" तुम्हारे बचपन के बारे में, तुम्हारी स्कूल लाइफ कैसी रही, किसके साथ रही?, तुम जवान कब हुई?" धीरा ने मुस्कुराते हुए पूछा।

" बचपन...तो गांव में बिताया ; अपने मम्मी और दादी के साथ रही क्योंकि पिता बचपन में ही एक लम्बी बिमारी के चलते चल बसे थे। मैंने गांव के स्कुल से ही अपना मिडिल पास किया। उसके बाद अपनी मौसी के घर चली गई। जहां आगे की पढ़ाई होनी थी। वहां से सेकेंडरी पास करने के बाद फूफाजी ने यहां बुला लिया।" अंजू ने अपनी बीती जिंदगी बताई।

“ तुमने अपनी जवानी कब आई बताया नहीं?” धीरा ने मसखरी करते हुए पुछा।

“ सेकेंडरी पास होने के बाद।” अंजू ने मुस्कुराते हुए कहा।

वेटर आइसक्रीम और काफी रखकर चला गया।

“ तुम बहुत अच्छी लड़की हो। लेकिन...।” धीरा बोलते हुए रुक गया।

“ लेकिन क्या?”

“ तुम्हारे फूफा...! बहुत ही दिमागखोर है। दिनभर अपने भाषणों से सबको पकाते रहते है। ” धीरा ने धीरे से कहा।

अंजू ने चिड़ते हुए धीरा को कोहनी पर मारा।

धीरा मुस्कराने लगा उसके साथ अंजू भी हंस पड़ी।

दोनों में बातें होती रहीं, कब दोपहर आ गई पता नहीं चला।

धीरा दोपहर तक अंजू के साथ रहा। उसके बाद अंजू को घर छोड़कर सीधा बंगले पर पहुंचा। आज रविवार का दिन था। कौशल्या उसका इंतजार कर रही थी। धीरा सीधा कौशल्या को ढूंढते हुए डाइनिंग हाल में पहुंचा जहां डाइनिंग टेबल पर राजनाथ और मेघना बैठे खाना खा रहे थे। कौशल्या खाना परोस रही थी। कौशल्या ने धीरा को देखते ही खाना खाने के लिए बुलाया। वह डाइनिंग टेबल पर जा बैठा।

“अम्मा!, मैं केवल आपके हाथों से बना खाना ही खाऊंगा।”

“ आज खाना मेने बनाया है; किसी को खाना हो तो खाएं।” मेघना ने तपाक से कहा।

“ आज खाना मेघना ने बनाया।” कौशल्या ने परोसते हुए कहा।

स्वादिष्ट व्यंजनों की सुगंध धीरा के नाक तक पहुंची तो धीरा टेबल आगे खिंचते हुए बोला

" ताजमहल किसी ने भी बनाया हो लेकिन उसकी खुबसूरती देखने का हक तो सबको होता है।" कहते हुए वह खाने पर टूट पड़ा।

कौशल्या और राजनाथ हंस पड़े लेकिन मेघना अंदर ही अंदर कुढ़ती हुईं खाना खाने लगी।

जब सभी खाना खा चुके तब मेघना ने राजनाथ को इशारे में कुछ कहा।

राजनाथ ने धीरा से पूछा -

"धीरा!, बेरिस्टर बाबु के घर जो लड़की आई है उसे पहचानते हो?"

अंजू का जीक्र आते ही धीरा हड़बड़ा उठा। यह सब मेघना की करतूत थी। वह सम्भल कर बोला-

"हां बाबा!, वह बेरिस्टर बाबु के घर ही रहती है और उनका घर मेरे पड़ोस में है। इसलिए पहचान हो गई।

"पड़ोस में है इसलिए पहचान है या उसके आसपास घुमते फिरते हो इसलिए पहचान है।" मेघना ने गुत्थी सुलझाते हुए कहा।

"मैं भला उसके पीछे क्यों घुमने जाऊं! मुझे बहुत काम रहते है।"

"ओहो...!, आपको बहुत काम रहते है, आपने कभी बताया नहीं। लड़कियों को तो आप देखते भी नहीं। शराफ़त तो कोई आपसे सीखे। तो फिर आप ऐसा कौन सा योगा करने जाते हो जो सुबह-सुबह ही योगाक्लास आ धमकते हो?"

धीरा ने खामोश रहना ही गनीमत समझी। उसे पता था कि मेघना जिसकी कमजोर नस को जकड़ लेती है उसे मैदान छोड़ना ही पड़ता है। वह खामोश ही रहा।

“वह अच्छी लड़की है। इस शहर में पढ़ने आई है। उसका परिवार और बेरिस्टर बाबु भी चाहते है कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करें। तुम्हारा उसके साथ यों घुमना उसके लिए अच्छा नहीं है। तुम उसके साथ रहना छोड़ दो। मुझे तुम दोनों की फ़िक्र है।” राजनाथ ने कहा।

“हम शिर्फ अच्छे दोस्त हैं। बेरिस्टर बाबु ने कहा था इसलिए मैंने उसके कालेज एडमिशन में मदद की थी।” धीरा ने सिर झुकाकर कहा।

“इसे मदद नहीं चांस मारना कहते है। उसके आसपास फटकने का बहाना ढुंढते रहते हों। ज़रा सी चिंगारी शहर जला सकती है।” मेघना ने बोलने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

कौशल्या ने मामले को सम्हालते हुए कहा

“मेघना अब चुप भी रह जा। वह बोल रहा है ना कि दोनों अच्छे दोस्त हैं। इसमें बात को इतनी तूल देने की जरूरत नहीं।”

“लेकिन मां.....।”

मेघना को रोकते हुए कौशल्या बोल पड़ी “मेघना....!, चुप भी रह जा।”

कुछ पल कमरे में बोझिलता छाईं रही। सन्नाटे को भंग करते हुए राजनाथ ने कहा

“इलेक्शन आने वाले हैं, मीडिया छोटे से मशाले को बड़ा-चढ़ा कर दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ती। इसलिए ऐसा कोई काम मत करना जिससे मुझे नीचा देखना पड़े।”

धीरा ने बिना सिर उठाएं ही हांमी भरी। वह कुछ बोल नहीं सका। उसे मेघना पर गुस्सा आ रहा था। आज मेघना अपना बदला लेने में कामयाब हुई। धीरा ने उसकी प्रेम कहानी को हलाल किया था, आज

मेघना ने उसके प्यार का गला घोंट दिया। हिसाब बराबर होना था सो हुआ, लेकिन धीरा की कहानी बाकी थी, उसकी जिंदगी को कुछ ओर ही मंजूर था।

शाम होते-होते धीरा घर पहुंचा। मुकेश वहां पहले से ही मौजूद था और उसके कमरे में बेठा टीवी पर भोजपुरी फिल्म देख रहा था। धीरा ने अचानक से उसके कंधे पर हाथ रखा तो वह घबरा उठा। उसे इतना सहमते हुए देखा तो खिलखिला कर हंस पड़ा।

"मुकेश! तुम बहुत डरपोक हो। इतना घबरा उठे हो कि जैसे कोई भूत देख लिया हो।"

"तुम साले....! भूत से कम थोड़े हो। कहीं से भी एकदम आ धमकते हो।"

"भूत नहीं, आज तो मेघना ने भूतिया बना दिया। बाबा के सामने, अम्मा के सामने, मेरी ऐसी खिंचाई की है मैं कभी भूल नहीं सकता।" धीरा ने मायूस होते हुए कहा।

"मेघना ने क्या किया जो तुझे खटक गया?"

"मेने उसके बायफ्रेंड को लताड़ा था,आज उसने मेरे प्यार को लताड़ दिया।"कहते हुए धीरा ने उसे सारी बात बताई।

"क्या तुम्हारी अंजू से बात हुई?" मुकेश ने पूछा।

"कैसे होती। अब तक बाबा ने बेरिस्टर बाबु को भी बता दिया होगा।अंजू की खूब खबर ली जा रही होगी।"

"अब इस बात को थोड़ा ठंडा पड़ जाने दे, उसके बाद तुम मेघना की खुब खबर लेना।" मुकेश ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा।

“मैं उस मेघना की बच्ची को नहीं छोड़ूंगा ।” धीरा गुस्से में सराबोर होकर बोला। उसका चेहरा गुस्से से लाल पड़ चुका था। उठ कर वाशरूम में पहुंचा कुछ पानी मूंह पर छिड़का। पानी की ठंडक से चेहरे पर कुछ ताज़गी का अहसास हुआ। उससे गुस्से का असर कुछ फ़ीसदी कम हुआ।

टीवी पर भोजपुरी फिल्म का अब क्लाइमेक्स चल रहा था। जिसमें हीरों एक लकड़ी के बम्बू से दुश्मनो को खदेड़ रहा था।

¶¶¶¶

दुसरे दिन सुबह धीरा योगाक्लास पहुंचा तो केवल अंजू को छोड़ सभी लड़कियां आईं थीं। बहुत देर इंतजार करता रहा, लेकिन अंजू को नहीं आना था सो नहीं आईं। वह उससे आख़री बार मिलना चाहता था क्योंकि अब उसे समय नहीं मिलने वाला था। इलेक्शन खत्म होने तक उससे नहीं मिल सकता था। बहुत इंतजार करने के बाद पैर पटकते हुए अपने वज्र वाहन पर सवार हो बंगले के लिए निकल पड़ा।

बंगले पर सन्नाटा पसरा हुआ था। धीरा ने मंत्रीजी की गाड़ी खड़ी देखी तो समझ गया कि मंत्रीजी चुनावी युद्ध की रणनीति बनाने आए होंगे। राजनाथ और मंत्रीजी की मीटिंग चल रही थी। दो सिक्योरिटी गार्ड आहते में खड़े गस्त लगा रहे थे। धीरा वहीं बाहर खड़ा रहा। कल से इलेक्शन प्रचार शुरू होने वाले थे। महिने भर इलेक्शन प्रचार चलेगा उसके उपरांत आगामी महीने में मतदान होंगे। मीटिंग खत्म होते ही मंत्रीजी बाहर निकलें तो धीरा से मिले।

“धीरा...!”

“हां, मंत्रीजी।”

“इलेक्शन की रणभेरी बज चुकीं हैं। इलेक्शन का मैदान तुम्हारे हाथों है। सामने दुश्मन अपनी फौज लिए खड़ा है। तुम जैसे युवा सिपाही ही जीत का ढ़ंका बजा सकते है।”

“हम भी कसम खा चुके, बाबा को जीत का गुलाल लगवा के ही रहेंगे। इस बार मैदान में हमारी जीत का ढ़ंका बजेगा।” धीरा ने आत्मविश्वास से कहा।

“मुझे तुम से यहीं उम्मीद है, लेकिन दुश्मन को कभी कम मत आंकना, दूश्मन ताकतवर हो या कमजोर दुश्मन आखिर दुश्मन होता है।” मंत्रीजी ने धीरा को गुमान से परहेज़ करने की हिदायत दी।

“मैं आपकी दी गई हिदायत का ख्याल रखूंगा। दुश्मन को नजरंदाज करना घाटें का सौदा हो सकता है।” धीरा ने स्वीकार किया।

“अच्छा.. अब मैं चलता हूं, बोर्ड मेरा इंतजार कर रहा होगा।” मंत्रीजी ने रूखसत होते हुए कहा।

मंत्रीजी के चले जाने के बाद धीरा राजनाथ के कमरें में पहुंचा। राजनाथ को एक युवक प्रोजेक्टर की मदद से इलेक्शन प्रचार में छपने वाले बैनरों को दिखा रहा था। जिसमें अलग अलग स्लोगन के साथ राजनाथ के उठे हुए हाथों की तस्वीरें, मंत्रीजी और पार्टी के प्रमुख व्यक्तियों की तस्वीरें और इलेक्शन चिन्ह ’हाथों में जलता हुआ मशाल’ था।

“धीरा!, कल पुरे बलमा जिले के हर गली ,मौहल्ले, चौराहे पर यह बैनर लगाए जाने हैं। तुम भी एक बार जांच कर लो, उसके बाद ही प्रिंटिंग के लिए भेजे।”

प्रोजेक्टर पर सभी बैनर को देखते हुए धीरा ने सभी बैनरों की जांच की उसके बाद जरूरी कांट-छांट के बाद उन्हें उस युवक के हवाले कर दिया।

“बाबा...हमारे इलेक्शन में क्या मुद्दे होंगे?”

“अब तक यही होता आया है कि जिस पार्टी ने जीतने के लिए जनता से बहुत से वादे किए, लेकिन जीत मिलने के बाद नतीजा क्या निकला! उनके वे वादे खोखले और बेबुनियाद सिद्ध हुए। सारे मुद्दे ज्यों के त्यों धरे रहे। अब तक उन्होंने बलमा शहर का शासन संभाला, लेकिन ना तो शिक्षा नीति के क्षेत्र में विकास हुआ और ना ही उन्होंने गरीबों का कल्याण करने में कोई रुचि दिखाई। जिस कारण जनता में शासन के प्रति नाराजगी साफ झलक रही है। शहर में फैलीं अव्यवस्था को दुर करने के लिए आम जनता के नजरिए से देखने की जरूरत है। हम अपने मन के मुद्दे बना कर जनता को कोई प्रलोभन नही देना चाहते। आम जनता में पहुंच कर ही उनकी समस्याओं को समझ कर मुद्दे बनाने होंगे। आम जनता की राय जानना महत्वपूर्ण है, ना कि पार्टी के खोखले मुद्दों को रखा जाना सही होगा।” राजनाथ आम जनता के बीच में रह कर ही उनके विकास में भागीदार बनना ज्यादा पसंद करने वाले व्यक्ति थे। उनके विचार से तानाशाही विकास के पथ पर गतिरोध का काम करती है। यदि जनता को नए प्रलोभन देकर जित का डंका बजा भी दिया जाए और परिणाम शून्य हुआ तो यह केवल वोट बैंक का महज़ एक छलावा था इससे ज्यादा कुछ नहीं।

“ लेकिन जहां तक में समझता हूं, इलेक्शन में हर कोई नेता, मंत्री, वादे करता आया है। उनके इलेक्शन की मेन स्क्रीन ही मुद्दों पर टिकी होती है। क्या पार्टी का यों मुद्दे ना बनाना सही रहेगा?” धीरा इस उलट फेर को स्पष्ट कर देना चाहता था।

“ क्यों नहीं!, जनता को स्पष्ट तौर पर उनके मुद्दे चुनने का अधिकार देना होगा। जनता ही तय करें कि उनकी बुनियादी जरूरतें क्या है। हमें उनके जीवन की बुनियादी व्यवस्था और समस्याओं पर काम करना होगा।” राजनाथ अपनी बाद पर अडिग रहे।

“ हां, यदि सभी राजनेताओं का नजरिया ऐसा हो जाए तो जनता का चंहूमुखी विकास होगा। चारों ओर विकास की लहरें दौड़ जाएगी।”

“ धीरा! इसका जिम्मा हमे ही उठाना पड़ेगा। बलमा को विकास की राह पर ले जाना ही हमारा प्रमुख मकसद है। इसलिए यह काम जनता की मूल समस्याओं को जान कर ही पूरा होगा।” राजनाथ ने कमरे से जाते हुए कहा। धीरा भी उनके पीछे चल पड़ा। बैनरों को प्रिंटिंग के लिए भेज दिया गया था। कल से इलेक्शन महाअभियान प्रारंभ होने जा रहा था।

¶¶¶¶

इलेक्शन प्रचार जोरों शोरों से चल पड़ा। बलमा जिले के प्रत्येक चौराहों और तीन बत्तीयों पर राजनाथ के बड़े बड़े होल्डिंग लगाए गए। राजनाथ और मंत्रीजी अपने भाषण से जनता का मनमोह रहे थे। युवा कार्यकर्ता और स्त्री शक्ति मिल कर जनता को प्रेरित कर रहे थे। जहां भी राजनाथ जाते जन सैलाब उन्हें सुनने के लिए उमड़ पड़ता। धीरा को सुबह से शाम हो जाती उसे मुख्य प्रचारक का कार्यभार सौंपा गया था। सभी गतिविधियों को वहीं तय करता। जिले भर में प्रचारित संबोधन को प्रसारित करवाना और जन सम्मेलन को सुनिश्चित करना।

नवम्बर में मतदान होनेवाले थे। जैसे जैसे मतदान की तारिख नजदीक आ रही थी वैसे चुनावी षड्यंत्र भी आग पकड़ रहे थे। विपक्षी दल अपनी जीत के लिए नए पैंतरे आजमा रहा था। उसकी राजनीति चालों को चकनाचूर करते हुए राजनाथ की छवि प्रखरता से जनता के सामने स्पष्ट होती जा रही थी। अखबारों के फ्रंट राजनाथ की बहुआयामी योजनाओं से भरे रहते। जनता के बीच राजनाथ के नाम का ढ़ंका बज रहा था। राजनाथ जनता के प्रिय बन चुके थे।

नवम्बर की शुरुआत हुई। मतदान की तारिख भी नजदीक आ चुकी थी। राजनाथ के बंगले पर उनके कार्यकर्ताओं की भीड़ लगी रहती। कब सुबह से शाम हो जाती पता ही नही चलता।

शाम को राजनाथ अपने मुख्य एडवाइजर से बात कर रहे थे। तभी धीरा दरवाजे पर दस्तक देता हुआ आया।

" आओ धीरा!"

" प्रचार का आज आखिरी दिन कैसा रहा?" धीरा ने पूछा।

"प्रचार बहुत अच्छा रहा। आज तुम साथ होते तो तुम भी देखते तुम्हारे बाबा का भाषण सुनने कितना जन सैलाब उमड़ पड़ा था।" एडवाइजर ने अतिसंयोक्ति में कहा।

"मुझे पता है। मेरे बाबा को वकालत के हो या राजनीति के दांव, सिखने में वक्त नहीं लगता।"

"अब प्रचार खत्म हो चुके हैं। अब विपक्षी अंधेरे में तीर मारने का प्रयास करेंगे। हमें उनकी हर चाल का जवाब चालाकी से देना होगा। यह अंधे खेल बड़े निराले होते हैं। हमें सम्भल कर रहना होगा।" राजनाथ ने चेताया।

“बलमा की जनता हमारे पक्ष में है। दुश्मन कीतना भी अंधा दांव खेले, आख़री में दांत उसी के खट्टे होंगे।” धीरा ने कहा।

“ नहीं, यदि दुश्मन अपनी चाल में कामयाब हुआ और जनता में गलत संदेश प्रचारित हो जाए तो परिणाम पलटने में देर नहीं लगती।” एडवाइजर ने कहा।

“कमजोर दुश्मन भी ख़तरनाक होता है। उसकी कमजोरी ही उसके लिए ताक़त बन जाती है।” राजनाथ ने पानी का ग्लास उठाते हुए कहा।

अभी राजनाथ ने गिलास होंठों पर लगाया ही था कि उनको अचानक से बैचेनी होने लगी। उनका दम घुटनें लगा। वे नीचे ही गिर पड़ते अगर धीरा ने उन्हें संभाला ना होता। धीरा और एडवाइजर घबरा गये। आनन-फानन में दोनों को कुछ समझ ही नहीं आ रहा था कि अचानक से राजनाथ को क्या हुआ।

घर के सभी लोगों को आवाज दी। बरामदे में बैठे सारे लोग दौड़ते हुए आए। उन्होंने राजनाथ की की ऐसी हालत देखी तो सभी घबरा उठे। समय खराब ना करतें हुए जल्दी से राजनाथ को हॉस्पिटल ले जाया गया।

हॉस्पिटल में एडमिट करते-करते राजनाथ की हालत और भी नाज़ुक हो गई। उन्हें इमरजेंसी वार्ड में एडमिट कर उपचार शुरू किया गया।

कुछ ही देर में मंत्रीजी और पार्टी कार्यकर्ताओं को खबर मिलते ही सभी हास्पिटल पहुंच गए।

जब डॉक्टर बाहर निकलें तो धीरा उनके पास दौड़ा हुआ आया।

“डाक्टर...! बाबा को क्या हुआ?” धीरा ने हड़बड़ाहट में पुछा।

" राजनाथ जी को हार्ट अटैक आया है। उनकी हालत बहुत नाज़ुक बनी हुई है।" डाक्टर ने धीमें स्वरों में कहा।

यह सुनते ही धीरा को एक आघात सा लगा। उसे भरोसा नहीं हो रहा था कि राजनाथ तो एकदम स्वस्थ और तंदुरुस्त थे फिर अचानक से हार्ट अटैक आना कैसे संभव है।

"बाबा ठीक तो हो जाएंगे ना?" धीरा ने रूंधे गले से कहा।

"हम पूरी कोशिश करेंगे।" डाक्टर ने धीरा को हिम्मत देते हुए कहा।

जब धीरा बेंच पर बैठी कौशल्या और मेघना के पास पहुंचा तो कौशल्या निढाल सी बैठी थी। मेघना की आंखों से आंसू छलक रहे थे। धीरा कौशल्या के पास आकर बैठ गया।

"बाबा को क्या हुआ है?" मेघना की नम आंखें धीरा की ओर ताकती हुई बोली।

" अभी ट्रीटमेंट चल रहा है। बहुत जल्दी बाबा ठीक हो जाएंगे।" धीरा ने कुछ हिम्मत बटोरते हुए कहा।

"दोपहर तक तो ठीक थे, अचानक ये क्या हो गया!" कौशल्या ने रूंधे गले से कहा।

"अम्मा..सब ठीक हो जाएगा! देखना बाबा फिर से एकदम स्वस्थ हो जाएंगे।"

सामने से मंत्रीजी जी आते दिखे। उनके साथ बाकी कार्यकर्ता भी थे। हॉस्पिटल के प्रमुख डाक्टर की टीम भी साथ थी। सारी जांच की रिपोर्टें आ गई थी।

"हमने दिल्ली के हार्ट स्पेशलिस्ट डाक्टरों को बुलवाया है। उनके अनुसार आज ही राजनाथ की हार्ट सर्जरी करनी पड़ेगी। आशा है बहुत जल्दी वें स्वस्थ हो जाएंगे।" मंत्रीजी ने धीरा के कांधे पर हाथ रखते हुए कहा।

धीरा की रूआंसी आंखें कभी मंत्रीजी को तो कभी शीशे से नजर आते अचेतन राजनाथ को ताकती रही। मुंह से कुछ नहीं निकल पा रहा था।

आपरेशन रात ग्यारह बजे शुरू हुआ तो रात तीन बजे तक चलता रहा, लेकिन कुदरत को कुछ ओर ही मंजूर था।

जनता के चहीते नेता राजनाथ दुनिया को अलविदा कह गए। पुरे परिवार पर गाज सी गिर पड़ी।

खबर लगते ही मीडिया ने खेद पूर्ण समाचार जनता में प्रसारित कर दिया। आगे जाने क्या होने वाला था।

¶¶¶¶

4

पहाड़ी की ठंडी हवाएं शरीर में सिहरन पैदा कर रही थी। कंपकंपाते उस केबिन में माधव अपने हाथों को आपस में मसलता हुआ चुप हो गया। सारे लोग उसकी कहानी को ध्यान से सुन रहे थे, जब माधव ने बोलना बंद किया तो कुछ देर केबिन में सन्नाटा छाया रहा। ध्यानमग्न नामधारी कुछ देर शुन्य में ताकता रहा। फिर आंखें मसलता हुआ मिश्राजी से बोला

“मिश्राजी! कुछ गर्माहट का इंतजाम करेंगे। सर्दी से दिमाग ठंडा पड़ गया है।”

मिश्राजी बाहर बैठे संतरी को चाय का बोलकर वापस केबिन में आ गए। संतरी चाय लेने दौड़ पड़ा।

" तब आगे क्या हुआ पत्रकार महोदय?"

" चुनाव आयोग ने चुनाव रद्द नहीं किए। चुनाव अपने नियत समय पर ही हुआ। राजनाथ की जगह मंत्रीजी स्वयं चुनाव लड़ें, लेकिन रमननाथ ने जनता को गुमराह किया उसके कार्यकर्ताओं ने जनता को डरा-धमका कर अपने पाले में कर लिया। इससे चुनाव का पासा पलट गया और जीत रमननाथ की झोली में गिरी। मंत्रीजी को फिर हार का मुख देखना पड़ा।" बोलते बोलते माधव रूक गया।

संतरी चाय रख कर चला गया। सभी के होंठों पर चाय की गर्माहट लगते ही कुछ ठंड कम हुई।

"लेकिन धीरा ने रमननाथ से ऐसा कौन सा बदला लिया जो उसने रमननाथ को मौत के घाट उतार दिया!" नमिता ने पूछा।

"एक यहीं बात तो खटक रही है कि राजनाथ की मौत एक प्राकृतिक घटना थी। उसमें रमननाथ का क्या अपराध और इलेक्शन भी रमननाथ अपने बलबूते जीता। मंत्रीजी की हार से उसे कुछ लेना देना नहीं। तब रमननाथ और उसके बेटे को मारने का क्या तूक बनता है!" माधव सोचता हुआ बोला। "मेरे पास जो जानकारी थी आपको बता चुका। अब मुझे जाने की इजाज़त दीजिए।" माधव ने खड़े होते हुए कहा।

"शुक्रिया, माधव। तुमने हमें इस केस को समझने में मदद की।" नामधारी ने माधव के प्रति आभार व्यक्त किया।

माधव के प्रस्थान करने के बाद नामधारी उठ कर खिड़की के पास खड़ा हो सोचने लगा "उसने यह हत्या क्यों की ये तो उस धीरा को आख़री गोली मारने से पहले ही पता चलेगा। कुछ भी कारण हो लेकिन कानून को अपने हाथ में लेकर उसने बहुत बड़ा गुनाह किया है।"

" धीरा ने रमननाथ और उसके बेटे को मारा ,ठीक है। लेकिन एक ड्राइवर को भला कोई क्यों मारेगा?" नमिता के माथे बल पड़ गए।

" हां, दुश्मनी रमननाथ और उसके बेटे से थी, उस ड्राइवर को मारना कुछ हजम नहीं हुआ। इस केस में ड्राइवर का भी कुछ इनवाल्व हो सकता है।" शरद ने कहा।

"हां, हमे उस ड्राइवर के घरवालों से भी पुछताछ करनी चाहिए।" नामधारी ने कहा।

" अब बचा रमननाथ बाघ का बड़ा बेटा 'राजासिंह बाघ'। और हत्यारा अभी खुलेआम घुम रहा है। राजासिंह की जान को भी खतरा हो सकता है।" नमिता ने कहा।

"हां, उसकी जान को खतरा है। हमे राजासिंह को इत्तिला कर देनी चाहिए।", नामधारी ने मिश्राजी से कहा "मिश्राजी! आप राजासिंह को फोन करो और उसे बताओं कि उसकी जान को खतरा है वह होशियार रहें। हम जल्द ही उसकी सुरक्षा का इंतजाम करते हैं।"

मिश्रा जी ने राजासिंह के घर फोन लगाया

कुछ घंटियों के पश्चात राजासिंह के मेनेजर ने फोन उठाया।

" मैं बलमा थाने का इंचार्ज मिश्रा बोल रहा हूं। राजासिंह से मेरी बात करवाइए।"

" वे अभी घर पर नहीं है।

"कहां गए हैं?"

"आज दशहरा है। वे मां काली के मंदिर गए हुए है। आज मां काली का पूजन उनके ही हाथों से होगा।" मेनेजर।

“उन्हें जल्द से जल्द इत्तिला कर दिया जाए कि उनकी जान को खतरा है। वे जहां हो सावधान हो जाएं। पुलिसबल उनके पास पहुंच रहा हैं।” मिश्राजी ने चेतावनी भरे शब्दों में कहा।

“क्या....! उनकी जान को खतरा।” मेनेजर चौंक पड़ा। “मैं अभी उनको खबर करता हूं।” मेनेजर बौखलाया हुआ बोला।

“हमारे पास वक्त नहीं है। उन्हें जल्द खबर दे दी जाए।” मिश्राजी ने फोन रखते हुए कहा।

सभी मां काली के मंदिर की ओर चल दिए।

¶¶¶¶

शाम का सूरज गेरूआ रंग बिखैर रहा था। पहाड़ी पर घंटियों की तेज गूंज और नगाड़ों की गड़गड़ाहट काली माता के मंदिर को थर्रा रहीं थी। बलमा वासी माता को प्रसन्न करने का भरपूर प्रयास कर रहे थे। कोई अपनी मस्ती में झूम रहा था तो कोई उच्चे स्थान पर खड़ा हो नज़ारे का लुत्फ उठा रहा था। बच्चे उछल-उछल कर अपना उल्लास जाहिर कर रहे थे।

मंदिर के पूजारी की काली पोशाक उसे अनोखा बना रही थी। आज पूरा बलमा शहर वहां जमा था। मंदिर के प्रांगण में रावण का बड़ा सा पुतला खड़ा था। लोग रावण दहन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

इसी शोरगुल के बीच राजासिंह के काफिले ने मंदिर में प्रवेश किया। हमेशा रमननाथ रावण दहन करते थे, लेकिन आज उनके उपरांत उनका बेटा रावण दहन करने वाला था। काफिला मंदिर के दांई ओर आकर रूका। पहले उसके बॉडीगार्ड हथियारों से लैस कार से उतरे तत्पश्चात राजासिंह उतरा। उसके

साथ बॉडीगार्ड हथियारों से लेस उसके आगे पीछे चलने लगे। राजासिंह ने काला लिबास पहन रखा था। उसे रास्ते में खबर मिल चुकी थी कि उसकी जान को खतरा है, लेकिन उसके माथे पर ज़रा भी शिकन की रेखा नहीं थी, लेकिन सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उसका मेनेजर अपने साथ कुछ ओर लोगों को भी ले आया था।

मां काली अपने विभत्स अवतार में अपने एक हाथ में खड्ग और दुसरे में असूर मूंड धारण किए हुए हुंकार भर्ती हुइ मुद्रा में शोभायमान थी। राजासिंह अपने हाथों में धुनी ले मां काली की महाआरती करने लगता है। ढोल-नगाडो का महाघोष दूर-दूर तक सुनाई देने लगा। शंखनाद दुर आकाश में अपनी हुंकार प्रसारित कर रहा था। जनता आस्था के सागर में गोते लगाने लगी। करीब एक घंटे तक महाआरती चलती रही।

महाआरती के पश्चात मंदिर प्रांगण में बने मंच पर राम-रावण युद्ध का मंचन किया जाने लगा।

युद्धभूमि,

श्रीराम ने दशानन को ललकार कहा " जीवनभर स्वयं को विद्वान कहलाते रहे!
और एक नारी का अपहरण कर चाण्डाल का काम करते तुम्हें लज्जा नहीं आईं।"
रावण ने प्रत्यंचा खींच ड़ंकार लगा कर कहा " हे राम ! युद्ध भूमि में ज्ञान ना दो, मैं यहां अपना व्यक्तित्व सुधारने नहीं आया हूं। युद्ध करों युद्ध....!"

श्रीराम ने धनुष पर बाण चढ़ाते हुए कहा "मूर्खों से कितनी भी बहस कर लो, वे मुर्खता का ही परिचय देंगे। अब मेरे बाण की तुमसे ज्ञानवार्ता करेंगे।" कहते हुए श्रीराम ने बाण छोड़ा। बाण दशानन की बांई भुजा को खरोंचता रक्त से स्नान करता हुआ निकल गया।

रावण ने बाण छोड़ा, बाण श्रीराम की कोहनी को छुता हुआ निकल गया।

इस तरह बाण वर्षा चलने लगी। युद्ध भूमि में शस्त्रों के टकराने का स्वर जारी रहा। हुंकार भर्ती हुई वानर सेना राक्षसों का विनाश कर रही थी।

जब रावण शक्तिहीन हो गया तो राम ने दशानन का सिर धड़ से अलग कर दिया, लेकिन अगले ही क्षण दुसरा सिर पुनः प्रकट हो गया। इस तरह कई सिर काटने पर भी युद्ध भूमि में दशानन ठहाका लगा रहा था। तभी मंच पर विभीषण का आगमन होता है, वह श्रीराम को दशानन को मारने की युक्ति बताने लगता हैं।

"मुर्ख..! विभीषण, शत्रु को अपने भाई को मारने की युक्ति बता रहा है।" दशानन दहाड़ा।

"भ्राताश्री! धर्म अग्रणी होता है। जब भाई अधर्म के मार्ग पर चलने लगे तब वह भाई नहीं अपितु शत्रु के समान हो जाता है।" विभीषण ने दशानन को मारने की युक्ति बता दी।

श्रीराम ने धनुष पर बाण चढ़ाया और दशानन की नाभी को लक्ष्य करके प्रत्यंचा छोड़ी, बाण हवा में सनसनाता हुआ दशानन की नाभी में जा धंसा। दशानन की अंतिम हुंकार निकलीं

"श्री राम.....!"

मंच से शंखनाद बजने लगा। वानर सेना ने जीत की हुंकार भरी।

" धर्म की विजय हो.....!"

" जय जय सियाराम.....!" जनता जयघोष लगाने लगी।

अब राम ने अपने धनुष पर जलता बाण मंदिर प्रांगण में खड़े उस रावण के पुतले पर छोड़ा। आग भड़काता बाण रावण रूपी पुतले की ओर बढ़ने लगा।

बाण रावण तक पहुंच पाता उससे पहले जनता के बीच खड़े एक युवक ने रिवाल्वर निकाल एक गोली दांगी। रिवाल्वर दहाड़ा,

धांय.....!

रामायण मंच के दांई ओर बने दुसरे मंच पर जंहा खास मेहमानों के बैठने की व्यवस्था रखी गई थी जिसमें राजासिंह भी विराजमान था। उसके माथे से खून की धारा बह निकली। राजासिंह लुढ़कता हुआ पीछे की ओर गिर गया। उसके बॉडीगार्ड कुछ देर तक समझ ही नहीं पाएं कि क्या हुआ है और गोली कहां से चली? भागते हुए राजासिंह को संभाला।

कुछ देर जनता अवाक् रह गई, लेकिन उसके बाद जनता में अफरातफरी मच गई। जनता में भगदड़ होने लगी।

इसी भगदड़ के बीच धीरा हाथ में रिवाल्वर लिए खड़ा था। जिसने अपने मुंह को ढंक रखा था। राजासिंह की मौत की पुष्टि होते ही वह तेजी से दहकते रावण के सामने गुजरते हुआ मंदिर प्रांगण से बाहर निकल गया।

धीरा के वंहा से निकलते ही नामधारी पहुंच गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसकी आंखें धीरा को तलाश रही थी, परंतु उसे लपटों से घिरे रावण के सिवा कुछ भी नहीं दिखा। सामने मंच पर राजासिंह की खोपड़ी से खून का रिसाव थमने लगा था।

लाउडस्पीकर से विजयसंख का नाद बज उठा।

¶¶¶¶

बलमा शहर में धीरा की तलाश हो रही थी। हर गली, हर चौराहे के चप्पे-चप्पे में उसे तलाशा जा रहा था। नामधारी को हेडक्वार्टर से सख्त आदेश दिया गया था। वह धीरा को हमेशा के लिए दुनिया से चलता करें।

दुसरे दिन भी खोजबीन शुरू की गई दोपहर आते-आते धीरा का एक सुराग मिल ही गया।

बलमा थाने एक फोन आया। मिश्राजी ने टेलीफोन पीक किया।

" हेलो! बलमा पुलिस स्पीकिंग!"

" मुझे धीरा का पता मालूम है।"

" कहां.... इस वक्त धीरा कहां है।" अधिर होते मिश्राजी ने पूछा।

" शहर से बाहर बने राजनाथ के बंद पड़े पुराने केमिकल कारखाने में।" सामने से आवाज आई।

" तुम कौन बोल रहे हो?"

" मैं उसका पुराना दुश्मन गब्बर बोल रहा हूं।"

फोन डिस्कनेक्ट होते ही मिश्राजी ने नामधारी को सुचना दी।

शहर से बाहर इंड्रस्ट्रीज एरिया था। जहां बड़े-बड़े कारखानों की चिमनियां धुंआ उगल रही थी। चारों ओर के वातावरण में केमिकल की जली हुई गंध फैलीं हुई थी। लोडिंग ट्रक धड़धड़ाते हुए आ जा रहें थे। इन्हीं कारखानों में से राजनाथ का भी एक पुराना कारखाना जो अब जर्जर अवस्था में पहुंच चुका था स्थित था।

नामधारी ने पुलिस बल के साथ उस कारखाने की चारों ओर से घेराबंदी की। कारखाने के गार्ड को गिरफ्त मे ले लिया गया। उसके बाद नामधारी,मिश्राजी और बाकी टीम कारखाने में दाखिल हुए। सभी सतर्कता के साथ चल रहे थे। मशीनों पर धूल की थड़ी लग गई थी। कारखाना धुंए और धूल से सराबोर था। केमिकल्स के जार यहां-वहां लुढ़क रहे थे। पैनी निगाह से पुरे कारखाने को देखा, लेकिन वहां परिंदा भी पर नहीं मार रहा था। दांई ओर बने उन कमरों में झांका तो वहां टूटे औजारों के अलावा कुछ नहीं था। इसी तरह दुसरे कमरों में भी देखा लेकिन परिणाम नदारद।

कारखाने में धीरा को ना पाकर मीश्राजी कुछ सुस्त पड़ गए।

" लगता है उस गब्बर ने गलत खबर दी थी!" मिश्राजी ने धीमें स्वरों में कहा।

"दुश्मन, झूठ तो नहीं बोलते,मिश्राजी।" नामधारी ने कहा।

लेकिन जब कारखाने का कोना-कोना छान लिया तो सब को यकिन हो चला कि धीरा कारखाने में नहीं है।

सभी ने अपनी बंदूकें नीचे कर ली और सभी वहां से बाहर निकलने को घूमें, तभी नमिता को एक जगह फर्श पर धूल साफ सुथरी दिखीं। उसने सभी को चूप रहने का इशारा किया।

सभी अलर्ट हो गए। उन्हें यकीन हो आया कि धीरा नीचे बने बेसमेंट में ही छुपा है।

नामधारी ने बाकी टीम को अपने नाटकीय अंदाज में कहा " ठीक है टीम! ऑल क्लियर!, हमें अब चलना चाहिए।"

सभी कलाकारों ने अपनी बंदूकें तान ली और हिफाजत से बेसमेंट का दरवाजा बिना किसी खटक के खोल दिया। नामधारी ने अपनी गन बेसमेंट के अंदर घुमाकर कर देखा। बेसमेंट बहुत बड़ा था। वहां सीढ़ियां बनी हुई थी। सभी हिफाजत से बेसमेंट में घुस आए। बेसमेंट में सूरज की रोशनी छन-छन कर आ रही थी। बेसमेंट में एक लैब बनीं हुई थी। केमिकल की तेज गंध नथुनों में फड़कने लगी। लैंब में कई सारे केमिकल्स रखें हुए थे। दीवार पर अखबारों की कई कटिंग चिपकी हुई थी। वे सभी बेसमेंट में कुछ कदम चले ही थे कि एक रिवाल्वर गरज उठा।

धांय.....!

सभी सावधान थे, नीचे झुक गए और गोली उनके ऊपर से निकल गई।

दौड़ते हुए पास में खड़े पिल्लर की ओट में खड़े हो गए।

सामने कुछ दूर दुसरे पिल्लर की आड़ में धीरा खड़ा था।

"धीरा...! अपने आप को हमारे हवाले कर दो।" नामधारी ने चेतावनी दी।

" नहीं इंस्पेक्टर...!"

"तुमने कानून को अपने हाथ में लेकर ठीक नहीं किया।"

" मैंने कोई गुनाह नहीं किया है। मैं बेगुनाह हूं। जो काम कानून नहीं कर सका मेंने कर दिया। इसे गुनाह नहीं बदला कहते है।" धीरा ने रिवाल्वर पर पकड़ जमाते हुए कहा।

“यह तो कानून ही बताएगा।” नामधारी ने एक कोने से झांकते हुए कहा।

“मुझे कानून पर थोड़ा भी भरोसा नहीं।”

“यह तुम्हारा आख़री फैसला है।”

“हां...।”

“ तब ठीक है, मरने के लिए तैयार हो जाओ।” नामधारी ने आख़री वार्निंग दी।

दोनों ओर से गोलीबारी शुरू हो गई। मीश्राजी के दाएं पैर पर गोली लग गई। धीरा भी ज़ख्मी हो गया। अब धीरा के पास गोलीयां खत्म होने लगी थी। जब धीरा की गोलियां खत्म हो गई तो सभी ने उसको घैर लिया।

नामधारी ने उसके सिर को निशाना बनाकर ट्रिगर दबा दिया।

“धांय!.....”

नामधारी ने हेडक्वार्टर को सुचना दी, “हेलो, मिशन बलमा हेज कंप्लीट।”

“ऑवर एण्ड ऑउट!”

¶¶¶¶

शाम तक बलमा शहर में खबर फैल गई कि नामधारी ने धीरा का एनकाउंटर कर दिया है। शहरभर में यही चर्चा का विषय बन गया।

नामधारी ने डीजीपी को फोन लगाया।

“गूड इवनिंग सर!, मिशन बलमा इज़ कम्पलेंट।”

“गूड, एसीपी नामधारी!, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।” डीजीपी ने उत्तेजित होकर कहा।

“ थैंक्यू सर!”

“यहां कब आ रहें हो?”

“ कल सुबह की चाय साथ पीएंगे।”

“ मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगा।”

“ओके सर!”, कहते हुए नामधारी ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

तभी विजय एक औरत को साथ में लेकर प्रवेश करता हैं। औरत एक अमीर घर से ताल्लुक रखने वाली लग रही थी। उसके किस्मती गहने और साड़ी इस बात के द्योतक थे, लेकिन विजय उसे डांटते हुए ला रहा था।

“विजय!, यह मोहतरमा कौन है? तुम इनके साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हैं।” नामधारी ने त्योरियां चढ़ाते हुए पुछा।

“यह मोहतरमा और कोई नहीं उस ड्राइवर की जोरू है।” विजय ने उसकी तरफ आंखें फाड़ते हुए बोला।

“ ओहो....!, ड्राइवर की औरत के ठाठ तो देखो। ये किस्मती गहने, ये बनारसी साड़ियां, ये मेकअप-सेकअप, क्या बात है।” पास में खड़ी नमिता ने कहा।

“हां, देख तो रहा हूं। जैसे कोई अमीर खानदान की शाही औरत लग रही है।” नामधारी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा।

" हां सर! देखने पर मुझे भी ऐसा ही लगा था। मेंने इसके घर की तलाशी ली तो पता है क्या मिला?"

"क्या?"

"एक ड्राइवर के घर चालीस लाख रुपए से भरा हुआ यह बैंग" हाथ में मौजूद एक भारी बैंग टेबल पर रखते हुए कहा।

सभी चकित रह गए। एक ड्राइवर जिसकी तनख्वाह महज दस हजार होगी उसके घर पूरे चालिस लाख। नामधारी ने अब सख्त लहजा अपनाते हुए पूछा।

" इस बारे में क्या ख्याल है मोहतरमा!"

" यह पैसें मेरे पति ने बैंक से लोन लिए थे। यह लोन का पै.....।

"खामोश....!, अपनी बकवास बंद करो, और सच-सच बताओं, इतना पैसा किसने दिया।" नामधारी ने चिल्लाते हुए कहा।

वह कुछ सहम गई। उसने कंपकंपाती हुई आवाज में कहना शुरू किया-

मेरा.. मरद लाला राजनाथ के यहां ड्राइवर था। उसे वहां चार साल हो गए थे। इतने सालों में उसकी वहां अच्छी पहचान हो गई थी, लेकिन हम दोनों के बीच रोज़ाना झगड़े होते रहते थे। मुझे किस्मती गहने और साड़ीयों का बहुत शौक था। वह मेरे यह शौक पूरे नहीं कर पा रहा था। इसलिए उससे हमेशा झगड़ती रहती थी, लेकिन वह मुझ से बहुत प्यार भी करता था पर उसके पास पैसा नहीं आ रहा था।

करीब तीन साल के बाद विधानसभा चुनाव आए और लाला राजनाथ को एमएलए का टिकट मिल गया। चुनाव में जब राजनाथ का पलड़ा भारी पड़ रहा था। तब एक रात रमननाथ का बेटा राजासिंह हमारे घर आया और उसने मेरे मरद को पचास लाख रूपए देने की मांग रखी। इतना पैसा देखकर हमारी आंखें

डबडबा गई। हमने उसका काम करने का फैसला कर लिया। उसके बाद उसने हमें एक लाल रंग के केमिकल की शीशी दी। जिसे दस दिन तक हर रोज राजनाथ के पीने के पानी में मिलाना था। मेरे मरद ने जिस कार को वह चलाता था, उसमें राजनाथ के पीने के पानी में मिलाना शुरू कर दिया। कोई बारह दिनों तक ऐसा चलता रहा उसके बाद दोपहर को राजनाथ को दिल का दौरा पड़ा। उसके बाद उन्होंने हॉस्पिटल में दम तोड दिया। वह केमिकल एक स्लो पोइजन था, उस जहर का काम होते ही वह शरीर से जैसे गायब हो जाता है। उस कारण डाक्टरों को लगा कि उनकी मौत हार्ट अटैक से हुई है। सभी ऐसा ही समझ रहे थे।

इसके बाद हमें हमारी पूरी रकम मिल गई। इस घटना के सालभर बाद मेरा मरद रमननाथ के साथ हो गया, लेकिन किस्मत को कुछ ओर ही मंजूर था। धीरा को पता चल गया कि एक स्लो पोइजन ने राजनाथ की जान ली है। उसने मौका मिलते ही उन तीनों को मौत के घाट उतार दिया।

नामधारी कुछ देर सोचता रहा।

“इस औरत को लॉकअप में डाल दो। जूर्म में मदद करना भी एक जूर्म होता है।” नामधारी ने आदेश दिया।

“साहेब..!मुझे छोड़ दिजिए। मुझसे गलती हो गई।” औरत गिड़गिड़ाने लगी, लेकिन लेडी कॉन्स्टेबल उसे घसीटती हुई ले गई और लॉकअप में ठूंस दिया।

“तो धीरा ने इस कारण रमननाथ और इन सब की हत्या की।” शरद ने कहा।

“सर इस केस का क्या नतीजा निकलता है?” नमिता ने गम्भीरता से पूछा।

नामधारी ने कुछ देर सोचने के बाद कहना प्रारंभ किया।

“सच जमीन में कितना ही गहरा दबा हो एकदिन बाहर आ ही जाता है। अपराधी कितनी ही चालाकियां करें उसका अपराध भी सामने आ ही जाता है। धीरा के साथ जो हुआ बेशक बुरा हुआ, लेकिन वह कानून की मदद भी ले सकता था, मगर उसने कानून को अपने हाथ में लिया बस यही उसने बड़ी ग़लती कर दी। जिसकी सजा उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

यदि नायक भी खलनायक की तरह ही पेश आएं तो नायक और खलनायक में क्या फर्क रह गया।

जब हम अपराधी के साथ भी अपराधी बन कर पेश आएं तो वह किसी बड़े अपराध को ही जन्म देगा। कानून अंधा जरुर है लेकिन गुमराह नहीं। वह गुनहगार को सजा जरूर देगा। बुरा तो तब है जब हम खुद एक बेगुनाह नागरिक होकर भी गुनहगार के साथ गुनहगार बन बैठते हैं।

स्वस्थ कानून तभी बन सकता है जब हम उसकी मदद ले और कानून की मदद करें; ना कि खुद कानून बन कर एक ओर गुनाह को जन्म दें।

समाप्त